ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मई, 2022

छुट्टियों में कुछ अलग करें

- अलविदा संतूर के जादूगर
- मुसकराना हमेशा
- दीवार पत्रिका

सपना पूरा हुआ

सहयोग राशि ₹ 20/ मात्र

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मई 2022

वर्ष : 2, अंक : 17

इस अंक की रचनाएं

इस अंक में खास

श्रद्धांजलि : अलविदा, संतूर के जादूगर 14
इनसे मिलिए : स्वागत है नए जनरल 15
खेल : सपना हुआ पूरा, थॉमस कप जीत गए 20
विज्ञान :
डॉ. शील कौशिक : प्रोफेसर वेंकटरमन रामाकृष्णन 28
धारावाहिक उपन्यास :
डॉ. विमला भंडारी : एक दुर्घटना 38
कुछ नया : छुट्टियों में कुछ अलग करें 40
कार्टून :
पंकज राय : शर्त 41
मिसाल-बेमिसाल : दीवार पत्रिका 44
प्रकृति का सितारा : अजब जानवर साही 46
`सैर-सपाटा : सांची 48
पढ़ो-पढ़ाओ : पुस्तक परिचय 50
चर्चा में : कमाल के समाचार 51

बाल मंच

चित्र : हिमांशु महरा, नेसी पांडे 30, जसमीत कौर, वरेण्य, अमनदीप सिंह 32, हरमनदीप सिंह 33, अनन्या बलूनी 35, प्रीत कौर 37
कविता व लेख : आईशा कौर 31
कविताएं : श्रीयांशी मंद्रवाल 33, दिव्या परगाई, गुरप्रीत कौर 36, काजल धारीवाल 37
संस्मरण : ऋतु कुमारी 34, सौमिका श्रीवास्तव 35

कहानियां

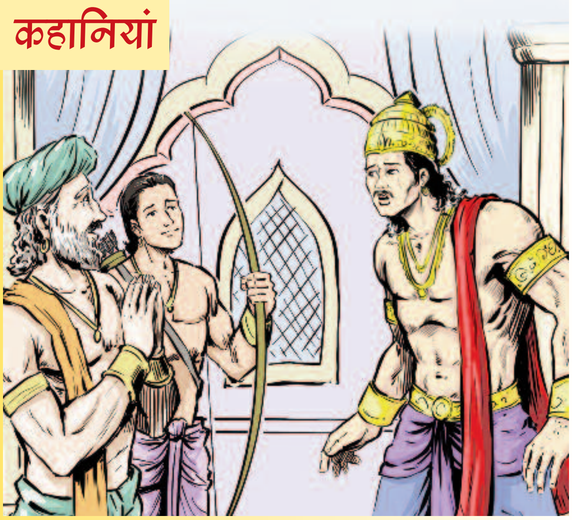

डॉ. अनिता भटनागर जैन : पब्लिक प्रॉपर्टी 5
अनिल जायसवाल : तीर का रहस्य 8
मनोहर चमोली 'मनु' : मुसकराना हमेशा 12
कमलेश पाण्डेय 'पुष्प' : गुब्बारे की चाह में 16
तरुण कुमार दाधीच : उनके अमरूद 22
मधु गोयल : कौन सिखाता मुझे 26
हरिन्दर सिंह गोगना : नया नौ दिन, पुराना सौ दिन 42

कविताएं

प्रभुदयाल श्रीवास्तव : पेड़ नीम का 5
डॉ. राकेश चक्र : हँसते-हँसते पढ़ें किताब 11
डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना : नाना जी 18
अरविंद कुमार साहू : पंखा झट से जागा 19
डॉ.सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी : चन्दा मामा 23
इंद्रजीत कौशिक : रट्टू राम 24
शिवचरण सरोहा : ईद 25

पायस

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

मई 2022, वर्ष : 2, अंक : 17

संपादक
अनिल जायसवाल

वरिष्ठ उप संपादक
श्यामपलट पांडे

कविता सलाहकार
संतोष कुमार सिंह

डिजाइन सलाहकार
भुपेन मंडल

(सभी पद अवैतनिक व मानद हैं)

Email
payasmagazine@gmail.com
Facebook
www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp
7982014609
Youtube
payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog
https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।

◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार करने की बाध्यता नहीं है।

संपादकीय पता

PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh,
New Delhi-110026

कवर चित्र : साभार गूगल

छुट्टियां हो गईं, पर खाली न बैठो

समय पंख लगाकर उड़ रहा है और इसकी उड़ान को थामने की क्षमता किसी में नहीं है। ऐसे में कहा जाता है कि बीत रहे समय का सदुपयोग करने वाला ही समय पर विजय प्राप्त कर लेता है।

2022 आएगा, ये बातें करते-करते अब हम इस साल का आधा हिस्सा जी चुके हैं। 2021 में बच्चों की ऑफलाइन कोई परीक्षा नहीं हुई थी, पर इस साल हुई और बच्चे घबराए भी। पर तुम बच्चों की यही खासियत तो हम बड़ों को भी प्ररित करती है कि परिस्थितियां कैसी भी हों, तुम सब हार नहीं मानते।

अब थोड़ा रिलैक्स करने का समय है। छुट्टियां पड़ गई हैं। इस समय का सदुपयोग करो और कोर्स के बाहर भी निगाह मारो। अपनी स्किल्स बढ़ाओ, अपने हाथों में कुछ हुनर लाओ। पेंटिंग बनाओ, वाद्य यंत्र बजाना सीखो। और नहीं तो खाना बनाना सीखो। जब बड़े होकर घर से बाहर निकलोगे, तो ये हुनर हमेशा तुम्हारी मदद करेंगे।

इन छुट्टियों में कोई न कोई हॉबी रखने का प्रण लो और उसमें जुट जाओ। ऑनलाइन कोर्स कर सकते हो। वीडियो देखकर आगामी पढ़ाई की तैयारी कर सकते हो। जिनके पास जगह है, वे बागवानी कर सकते हैं।

मतलब सिर्फ इतना है कि अपने कीमती समय को केवल सोकर, खाकर, टीवी देखकर या गेम खेलकर जाया न करना।

पिछले दिनों हमने हाथों का ऐसा ही हुनरमंद संगीतकार संतूरवादक पंडित शिवकुमार शर्मा को खो दिया। हम सब संतूर को शायद उनके कारण ही जानते हैं। उन्हें श्रद्धांजलि।

उक्रेन युद्ध अब भी जारी है और इसे रोकने के बजाय इसे भड़काने में अन्य देशों की ज्यादा दिलचस्पी लग रही है। इधर अफगानिस्तान में महिलाओं और बच्चियों पर नए प्रतिबंध वहां के अनपढ़ और दंभी शासकों की उस मानसकिता को दर्शाता है, जिसमें पुरुष महिलाओं को बराबरी का दर्जा देना, अपना अपमान महसूस करता है।

पर समय के थपेड़ों से कोई दंभी नहीं बचा। संसार को खतरे में डालने वाले ये लोग भी नहीं बचेंगे।

इन छुट्टियों के लिए तुम सबको फिर से बधाई।

अनिल जायसवाल

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया 12वां अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. रेनू मंडल
3. समीर गांगुली
4. रावेन्द्र कुमार रवि
5. मंजूरानी जैन
6. गिरिजा कुलश्रेष्ठ
7. नूरेनिशां
8. महेंद्र चंद्र कपिल

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

जिनकी वार्षिक सदस्यता के 12 महीने हो गए हैं, उनसे अनुरोध है कि फिर से मदद करें

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : ₹ 20, एक वर्ष : ₹ 240

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

एक अपील

वार्षिक सदस्य बनकर पत्रिका को आगे बढ़ाने में मदद करें

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609

PHONEPE : 9810556533

GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

पेड़ नीम का

अपने लेखक को जानिए

प्रभुदयाल श्रीवास्तव : मूलतः कवि, विभिन्न-पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य सहित 500 से ज्यादा रचनाओं का प्रकाशन, एक व्यंग्य और दो गीत संग्रह प्रकाशित।

घर के बाहर छाता बनकर ,
खड़ा हुआ है एक हकीम सा
पेड़ नीम का।

हवा चली तो डाली पत्ते
झूमे ,छिवा छिवौअल खेले,
सुबह धूप के हरकारों ने,
हर दिन दंड तने पर पेले।
सेवक बनकर दरवाजे पर ,
अड़ा हुआ है बली भीम सा
पेड़ नीम का।

चाचा, पापा, बड़ी बुआ ने
यहीं बटोरीं पकी निबौली,
यहीं बैठकर भरी सभी ने ,
शुद्ध हवा से अपनी झोली।
देता रहा निरंतर सबको,
खुशी-खुशी से सुख असीम सा
पेड़ नीम का।

गुड़ की लैया, तिल की पट्टी
यहीं बैठकर सबने खाई,
बात-बात में आपस में ही
हुई दोस्ती, हुई लड़ाई।
इन सबसे बेखबर खड़ा है
समझदार, अच्छा मुनीम सा
पेड़ नीम का

पब्लिक प्रॉपर्टी

“सदियों से आगरा विश्व में ताजमहल के लिए मशहूर रहा है। आज वह दिन आ गया कि यह देश के सबसे प्रदूषित शहरों में जाना जा रहा है।” अखबार पढ़ते हुए मौसी ने कहा। मौसी कॉलेज में सिविक्स यानी नागरिक शास्त्र पढ़ाती थीं ।

अनुश्री और अनिरुद्ध नाना-नानी के साथ तीन दिन की छुट्टियों में मौसी के घर आगरा आए थे।

नाना ने मौसी से कहा, “चलो, कल एक बार फिर ताजमहल देखा जाए। बच्चों को भी कला और इतिहास की जानकारी मिलेगी।”

नानी ने मुसकराते हुए कहा, “सबसे पहली बार तो मैंने ताजमहल चांदनी रात में देखा था। चांद की किरणों में इतना चमक रहा था कि मुझे सपने जैसा लगा था।”

अनुश्री बोली, “मम्मी बताती हैं कि ताजमहल का रंग दिन भर में अलग-अलग समय पर बदल जाता है। सुबह सूर्योदय पर दूधिया, दोपहर में चमकता सफेद, सूर्यास्त पर सुनहरा नारंगी और रात में चमचमाता नीला।

अगले दिन सब लोग सुबह आठ बजे ताजमहल पहुंच गए। मुख्य दरवाजे से ताजमहल की पहली झलक देखते ही नाना जी बोले, “अरे, यह तो बीमार लगता है। रंग कितना पीला हो गया है।”

ताजमहल के दोनों तरफ बल्लियों का जाल था। पता चला, मरम्मत का कार्य चल रहा है। जब ताजमहल के पास ऊपर चारों तरफ के चबूतरे पर पहुंचे, तो नाना जी आश्चर्यचकित रह गए। दीवारों पर झिलमिलाते रंगीन पत्थरों की जगह ज्यादातर संगमरमर में खुदे फूलों में खाली गड्ढ़े थे, जिनमें काली परत पड़ गई थी।

गैलरी की दीवारें लोगों के हाथ लगाने से भूरी हो गई थी। यद्यपि नोटिस लगा था, ‘दीवार पसीने से खराब हो जाती हैं, कृपया उन्हें न छुए’ फिर भी लड़कों का एक समूह शोर मचाते हुए दीवारों को हथेलियों से छूते हुए आगे बढ़ रहा था।

मौसी ने होंठ पर उंगली रख, कुछ लोग जो जोर-जोर से चीखकर बात कर रहे थे का ध्यान एक नोटिस की तरफ आकर्षित किया जिस पर लिखा था, ‘कृपया शांति बनाए रखें और दूसरों को भी यहां का आनंद उठाने दें।’ बंद जगह होने के कारण आवाजें और भी कई गुना तेज सुनाई दे रही थीं।

बाहर के चबूतरे से निकलकर सब सीढ़ियों से नीचे बगीचों में आ गए।

अनिरुद्ध ने नाना का हाथ खींचते हुए कहा, “नाना जी, यहां मरम्मत क्यों हो रही है ? आप तो कहते थे कि दीवारों पर झिलमिलाते रंग-बिरंगे पत्थर जड़े हैं, पर यहां तो कुछ भी नहीं दिखा।”

नाना ने गहरी सांस लेते हुए कहा, “बेटा, कुछ तो मैंने खुद देखें हैं पर

कहते हैं कि अनेक पर्यटकों ने उन्हें कुरेदकर निकाल लिया।”

“उनकी संपत्ति थोड़े ही है कि वह उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं।” मौसी बोली।

“नाना जी, बिना अनुमति कुछ भी वस्तु अपने आप ले जाना तो चोरी भी हुई।” अनुश्री बोली ।

थोड़ी दूर आगे चले, तो एक लाल पत्थर की बेंच पर एक युवक किसी नुकीली चीज से कुछ लिख रहा था और उसके बगल में खड़ी युवती हंसते हुए उसे देख रही थी।

नाना जी से न रहा गया। वह बोले, “ क्यों बेटा, हमारे ताजमहल को तुम नुकसान क्यों पहुंचा रहे हो ?”

युवक सकपका गया, पर जोर से बोला, “आपका ताजमहल कैसे ? यह तो पब्लिक प्रॉपर्टी है, सबकी है। मैं तो अपना और अपनी मंगेतर का नाम लिख रहा हूं, क्योंकि आज का दिन हमारे लिए यादगार है। देखिए, बेंच पर, सामने की दीवार पर कितने लोग पहले से ही अपना, अपने मित्रों का नाम और तारीख लिख गए हैं।”

नाना जी ने मुसकराते हुए उत्तर दिया, “सही कहा तुमने, यह पब्लिक प्रॉपर्टी है। पहले की अनेक पीढ़ियों की थी, आज हम सबकी हैं और भविष्य की पीढ़ियों का भी इस पर अधिकार है। पर क्या हमें बेंच पर नाम लिखने का हक है ? सोचो, जितने लोग यहां आते हैं, यदि सब तुम्हारी तरह बेंच, इमारत, दीवार या पेड़ के तने पर अपना नाम लिखेंगे, तो इस स्थान की सुंदरता पूरी तरह समाप्त हो जाएगी। यादगार स्मृतियां कैमरे और अपनी डायरी में कैद करो। हम पब्लिक प्रॉपर्टी के मालिक और उसकी सुरक्षा करने वाले दोनों ही हैं।”

युवक ने हाथ जोड़ते हुए लज्जित स्वर में कहा, “बाबू जी, आपने मेरी आंखें खोल दीं। हम सदा अपने अधिकारों के बारे में सोचते हैं, कर्तव्यों के बारे में नहीं।”

“बाबूजी, आपने मुझे प्रेरणा दी। क्या हम दोनों आपके साथ भी फोटो खिंचवा सकते हैं ?” युवक ने पूछा।

नाना युवक और युवती के बीच खड़े हो गए और स्नेह से आशीर्वाद की मुद्रा में उनके सिर पर हाथ रख दिया। ●

अपने लेखक को जानिए

डॉ. अनिता भटनागर जैन : 1985 बैच की भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी हैं। इनके जीवन के कई आयाम है, लेखिका, प्रशासनिक अधिकारी, अभिनेत्री, पर्यावरणविद, प्रेरक वक्ता आदि।

वर्तमान में उत्तर प्रदेश लोकसेवा अभिकरण में सदस्य व नेशनल बुक ट्रस्ट की ट्रस्टी हैं। उत्कृष्ट प्रशासनिक प्रबंधन व नेतृत्व हेतु मुख्यमंत्री उ.प्र. से, राज्य महिला आयोग से और पर्यावरण के क्षेत्र हेतु भी अनेक सम्मान प्राप्त हुए।

तीर का रहस्य

चित्र : नीतू खोहवाल

अनिल जायसवाल

रामपुर का राजा राजसिंह बहुत लड़ाकू था। पड़ोसी राज्य की कोई भी बात उसे चुभ जाती, तो वह तुरंत उस राज्य पर आक्रमण कर देता। उसकी सेना बहुत मजबूत थी, इसलिए वह आसानी से जीत जाता था। हर बार जीतने से उसका घमंड दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा था।

राजसिंह का महामंत्री गिरधर लाल समझ रहा था कि बार-बार हो रहे युद्ध के कारण राज्य कमजोर पड़ रहा है। राज खजाने को खाली होते देखकर भी वह चिंतित हो रहा था। कई बार उसने इस बारे में इशारे से राजसिंह को समझाने की कोशिश की। पर हर बार राजसिंह का उत्तर होता, "हम दूसरे राज्य को हराकर वहां का खजाना तो ले ही आते हैं। फिर परेशानी क्या है?"

गिरधर लाल उसे समझाना चाहता, 'महाराज, हम जीत तो रहे हैं, पर साथ में दुश्मनों की संख्या भी तो बढ़ा रहे हैं। अगर दोस्त से ज्यादा दुश्मन हो जाएं, तो यह राज्य के लिए ही नहीं, किसी आम जन के लिए भी हानिकारक होता है।' पर राजसिंह से वह बोल नहीं पाता।

एक दिन बादल घिरे हुए थे। एकाएक राजसिंह का नौकाविहार करने का मन हुआ। जल्दी ही तैयारी की गई और वह विहार पर निकल गया। जिस नदी में राजसिंह सैर कर रहा था, उस नदी का दूसरा किनारा

पड़ोसी राज्य सूरजगढ़ में पड़ता था।

सैर के दौरान अचानक नदी में राजसिंह की नौका के पास हलचल हुई। जब तक वह कुछ सोचता, दूसरे किनारे से दो तीर चले। एक तीर तो राजसिंह की नौका पर लगा, पर दूसरा तीर नदी में जा गिरा और देखते-देखते राजसिंह की नौका के पास की हलचल शांत हो गई।

राजसिंह ने तीर देखा। तीर पर सूरजगढ़ के राजघराने का चिह्न था। उसने समझा, उसकी जान लेने का प्रयास किया गया है। उसने तुरंत सेनापति को आदेश दिया, "राज्य में पहुंचते ही सूरजगढ़ पर आक्रमण की तैयारी करो।"

महामंत्री गिरधर लाल ने तीर देखा, फिर बोला, "महाराज, एक बार ठंडे दिमाग से विचार कर लीजिए। आप पर आक्रमण करना होता, तो कोई भेदिया करता। राजघराना अपने तीर से आप पर आक्रमण नहीं करेगा। कुछ चाल है या कोई और बात है।"

बात में दम था। राजसिंह सोच में पड़ गया। फिर कुछ विचारकर उसने अपने अंगरक्षक व जासूस माधव के कान में कुछ कहा। सुनते ही माधव नदी में कूद गया और गुम हो गया।

इधर राजसिंह का सैर से मन उचट गया। उसने नाव घुमाने की आज्ञा दे दी और अपने महल वापस चला आया।

अगले दिन दरबार लगा। सब माधव का इंतजार कर रहे थे। काफी देर बाद माधव वापस लौटा। उसके साथ दो लोग और थे, एक बूढ़ा और एक जवान।

"माधव, तुम्हें लौटने में देर क्यों हुई? क्या पता चला तुम्हें? और हां, ये दोनों कौन हैं तुम्हारे साथ?" राजसिंह ने पूछा।

"महाराज, मामले की तह तक पहुंचने में देर हो गई। पर तीर का सारा रहस्य पता करके आया हूं।" माधव हाथ जोड़कर बोला।

"बताओ, किसने मुझे मारने की कोशिश करने की हिम्मत की, किसने ऐसी साजिश रची?" गुस्से से अपने नथुने फुलाते हुए राजसिंह दहाड़े।

माधव के साथ आया युवक आगे बढ़ा और निर्भिकता से बोला, "महाराज दोनों तीर मैंने चलाए थे। पर मेरा एक ही तीर निशाने पर बैठा। जरूरत पड़ने पर तीर चलाने का आदेश मुझे मेरा पिता ने दिया था।" कहकर युवक ने अपने साथ के बूढ़े की ओर इशारा किया।

राजसिंह का चेहरा क्रोध से लाल हो उठा। उसने तुरंत सेनापति को आदेश दिया, "गिरफ्तार कर लो इन दोनों को।"

"महाराज। पहले इनकी पूरी बात तो जान लें।" माधव ने विनती की।

"तुम्हें भी सजा मिलेगी। तुमने दोषी को गिरफ्तार करने के बदले मेरे दरबार में लाने की हिम्मत कैसे की?" राजसिंह का गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

"पहले हमारी पूरी बात सुन लीजिए। फिर आप जो सजा देंगे, मंजूर होगा।" पहली बार बूढ़ा बोला। उसकी वाणी में इतनी गंभीरता थी कि राजसिंह भी बात सुनने से इनकार न कर सका।

युवक ने बोलना शुरू किया, "महाराज, जब आपका नौका विहार का कार्यक्रम बना, तो हमारे जासूसों ने हमें खबर की। तब हमारे महाराज ने मुझे बुलाकर आज्ञा दी कि मैं सेना की एक टुकड़ी लेकर नदी किनारे आप पर नजर रखूं?"

"क्यों?" राजसिंह को नजर रखने की बात पर गुस्सा आ गया।

"वो इसलिए कि आपका स्वभाव लड़ाके का है। आप किस बहाने युद्ध शुरू कर देंगे, कोई नहीं जानता।" युवक शांति से बोला।

"तो?" राजसिंह अपने बारे में यह सुनकर तिलमिला उठा।

"महाराज ने आप और आपके साथी की हर बात पर नजर रखने को इसलिए भी कहा कि आप बिना किसी तैयारी के नदी में नौका विहार पर जा रहे थे। चूंकि नदी के दूसरी छोर पर हमारा राज्य है, अतः कोई भी घटना घटती, तो दोषी हमें ही माना जाता। आपकी इस असुरक्षित यात्रा का फायदा आपके दुश्मन भी उठा सकते थे।"

"अच्छा।" अब राजसिंह की आवाज की कड़क कुछ कम हुई थी।

"जी महाराज। जब आप नौका विहार कर रहे थे, तो मैं अपने किनारे पर आपके साथ-साथ आगे बढ़ रहा था। तभी मुझे आपकी नौका के पास हलचल सी महसूस हुई। मुझे लगा कोई मनुष्य है।"

"क्या?"

"जी। मैंने सोचा कोई दुश्मन आप पर किसी प्रकार का आक्रमण करने की फिराक में है। मेरे पास समय ज्यादा नहीं था। मैंने उसे निशाने पर लेकर फटाफट दो तीर चलाए। एक तो निशाने पर लगा और दूसरे का निशाना चूक गया और वह आपकी नौका पर जा लगा और आपने मान लिया कि आप पर हमला किया गया।"

"अच्छी कहानी है, पर मैं कैसे विश्वास कर लूं? तुम्हारे पास क्या सबूत है और राजशाही तीर तुम्हारे पास कैसे पहुंचा?"

"महाराज सुबूत मैं हूं।" माधव आगे बढ़कर बोला, "जब मैं नदी में कूदा, तो पहले मैंने दूसरे तीर को ढूंढ़ने की कोशिश की। मुझे एक व्यक्ति छटपटाता हुआ मिला, जिसे

तीर लगी थी। मैं उसे अपने साथ किनारे पर ले आया। वहां मौजूद इनकी टुकड़ी ने हमें पकड़ लिया। उस घायल को तो वे वैद्य के पास ले गए, पर मुझे पूरे सम्मान के साथ यह युवक अपने राजा के पास ले गए।"

"महाराज के पास?" राजसिंह चौंका।

"जी। वहां इस युवक ने मुझे सब बात बताई। सुनकर इन दोनों के प्रति मेरा सम्मान बढ़ गया।" कहकर माधव ने युवक और बूढ़े को प्रणाम किया।

"इनके प्रति सम्मान क्यों बढ़ा? तुम्हें तो वहां के राजा जनकसिंह को शुक्रिया कहना चाहिए।"

"महाराज, ये और कोई नहीं, राजा जनकसिंह ही हैं और साथ में आपकी जान बचाने वाला यह युवक वहां के राजकुमार विजय सिंह हैं।"

बूढ़े ने अपनी पगड़ी उतारी और राजसिंह से बोले, "मेरे मन में आपके प्रति कोई बैर न था, न है। हम मन से सच्चे थे, इसलिए बेहिचक माधव के कहने पर आपके दरबार में सच्चाई बताने आ गए।"

"महाराज, इन्हें मैं इसीलिए साथ लाया ताकि आपको बता सकूं, कि सबसे वैर मोल नहीं लेना चाहिए। जीवन में सच्चे हितैषी भी जरूरी हैं।" माधव हाथ जोड़कर बोला।

राजसिंह ने कुछ सोचा और पहले महामंत्री गिरधर लाल को हाथ जोड़े, जिनके समझाने पर उन्होंने आक्रमण करने का विचार छोड़ दिया था। फिर वह हाथ जोड़कर जनकसिंह की तरफ बढ़े और बोले, "मैंने जीवन में वैर ही कमाया है। आज मित्रता कमाना चाहता हूं, क्या आप मेरी मित्रता स्वीकार करेंगे?"

जनकसिंह ने तुंरत उनका हाथ थाम लिया। फिर दोनों गले लग गए।

अब सबके चेहरे पर प्रसन्नता दिख रही थी।

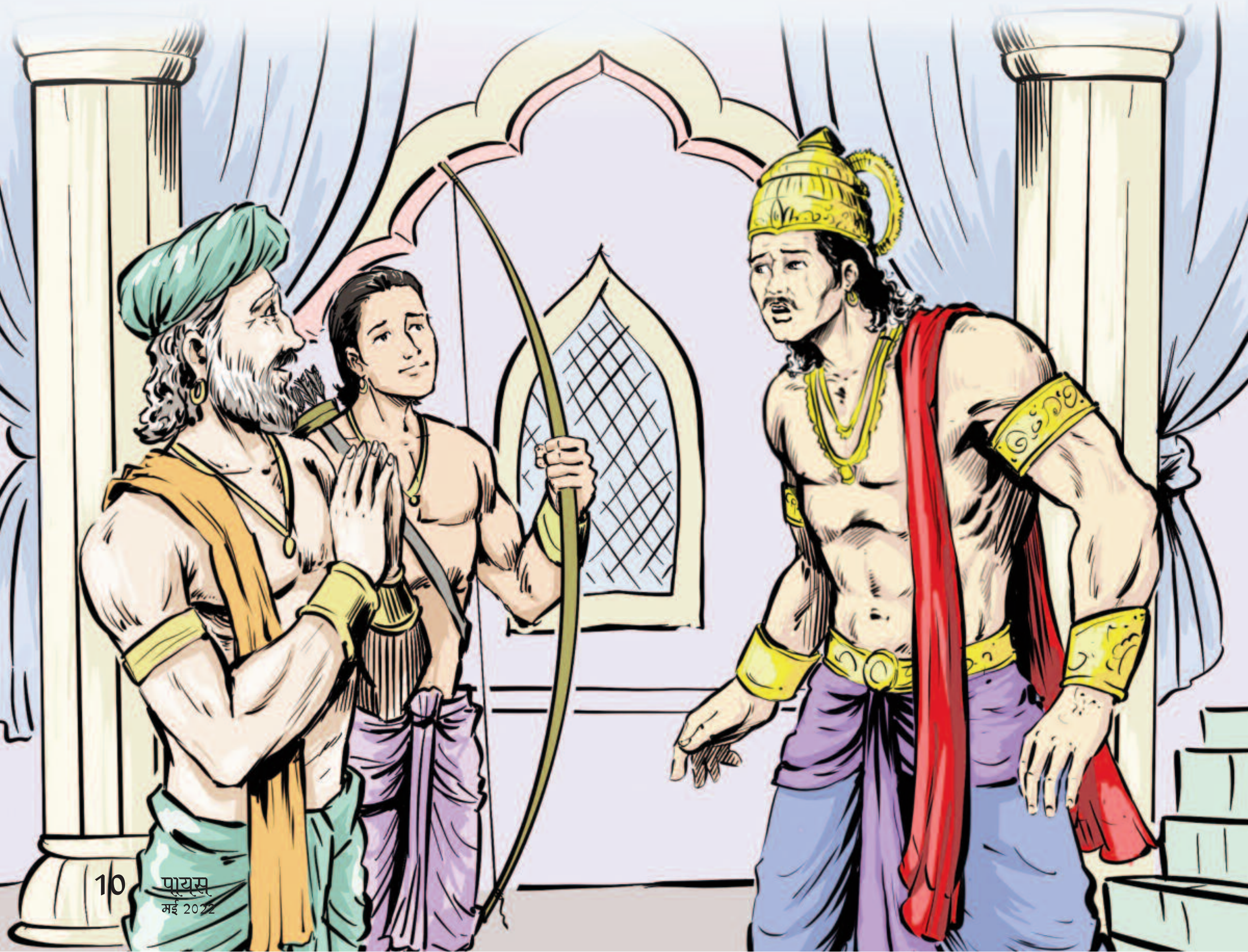

हँसते-हँसते पढ़ें किताब

अपने लेखक को जानिए

डॉ. राकेश चक्र : भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से कई बार सम्मानित एवं पुरस्कृत। नौ दर्जन से अधिक मौलिक पुस्तकें प्रकाशित। छह दर्जन बाल साहित्य में गद्य और पद्य की मौलिक पुस्तकें।

सत्य मित्र की जड़ें किताब।
हँसते-हँसते पढ़ें किताब।
डरना नहीं कभी भी इनसे,
अंधकार को हरें किताब।।

अक्षर- अक्षर बाँचे सोनी।
गिनती खूब सुनाए जॉनी।
पोयम मंजू गाती बढ़िया,
स्टोरी को पढ़ती मोनी।।

नए सपन भी गढ़ें किताब।
हँसते-हँसते पढ़ें किताब।।

प्यारी सोनम तुम भी पढ़ना।
आगे - आगे मंजिल चढ़ना।
अनवी, पूनम तुम भी पढ़ लो,
नए - नए तुम सपने गढ़ना।।

सपने पूरे करें किताब।
हँसते-हँसते पढ़ें किताब।।
अच्छी हमको बात सिखातीं।

मौन - मौन मुस्काती जातीं।
कभी न मुख पर लातीं गुस्सा,
ज्ञान हमारा सदा बढ़ातीं।।

नई उमंगें भरें किताब।
हँसते-हँसते पढ़ें किताब।।
मुन्नी पढ़ना, मुन्ना पढ़ना।

कभी किसी से तुम मत लड़ना।
सदा समय की कीमत समझो,
मिल-जुल कर ही आगे बढ़ना।।

हर मुश्किल में लड़ें किताब।
हँसते-हँसते पढ़ें किताब।।

मुसकराना हमेशा

सलमा आज कुछ गमले ले आई। नाहिदा ने पूछा, "अम्मी। ये गमले किस काम आएंगे?"

सलमा ने जवाब दिया, "फूलों की पौधे लगा रही हूं, देखती रहो।" सलमा ने उनमें पौधे लगाए।

नाहिदा ने पूछा, "अब?"

अम्मी ने जवाब दिया, "अब ये पौधे बड़े होंगे, फिर फूल आएंगे। फिर फूलों से खुशबू आएगी।"

"फिर?"

"फिर रंग-बिरंगी तितलियां आएंगी।"

"रंग-बिरंगी? मतलब?"

सलमा ने हंसते हुए जवाब दिया, "रंग-बिरंगी यानी कलरफुल। ह्वाईट, ब्लैक, गोल्डन, येलो, रेड, सिल्वर, ग्रीन, ब्लू और स्काई ब्लू कलर के पंखों वाली खूब सारी तितलियां आएंगी। वे फूलों पर मंडराएंगी। उनका रस चूसेंगी। आप उनसे दोस्ती करना।"

नाहिदा भी हंसने लगी, "हां, बड़ा मजा आएगा।"

अब तो सलमा के साथ नाहिदा भी गमलों की देखभाल करने लगी। पौधों को बड़ा होते देख, वह हर रोज पूछती, "अम्मी, फूल कब आएंगे?"

जवाब मिलता, "बस कलियां खिलने ही वाली हैं।"

फिर एक दिन ऐसा भी आया कि नन्ही कलियां खिलने लगीं। पौधों पर रंग-बिरंगे फूल खिलने लगे।

कुछ ही दिनों में फूलों पर तितलियां भी मंडराने लगीं। नाहिदा जैसे ही तितलियों के पास जाती, वह उड़ जातीं। वह उदास हो जाती। रात को सोने से पहले नाहिदा ने कहा, "अम्मी। कल तो मैं एक तितली को पकड़ ही लूंगी।"

सलमा ने समझाया, "नहीं, तितलियों को पकड़ना नहीं चाहिए। उनके कोमल पंख टूट जाते हैं। फिर वह कैसे उड़ेंगी?"

नाहिदा तितलियों के बारे में

चित्र : भुपेन मंडल

सोचते-सोचते सो गई। वह आंगन में खेल रही थी। उसकी नजर फूलों पर मंडरा रही एक तितली पर पड़ी।

नाहिदा सुनहरे पंखों वाली तितली को देखकर बेहद खुश थी। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे तितली के पंखों में इंद्रधनुष उतर आया हो। नाहिदा दबे पांव तितली की ओर बढ़ी। तितली रस चूसने में मगन थी। नाहिदा ने तितली को पकड़ ही लिया।

तितली ने नाहिदा से कहा, "मुझे क्यों पकड़ा? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? अगर मेरे पंख टूट गए, तो मैं उड़ नहीं पाऊंगी। मुझे छोड़ दो, नहीं तो मैं मर जाऊंगी।"

यह सुनते ही नाहिदा ने तितली को छोड़ दिया। तितली भागी नहीं। वह नाहिदा के कंधे में बैठ गई। उसने नाहिदा से कहा, "तुम अच्छी हो। तुमने मुझे छोड़ दिया। अब मैं हर रोज तुम्हारे यहां आऊंगी। फिर हम दोनों खेला करेंगे। अच्छा। अब मैं चलती हूं।" कहकर तितली नाहिदा की आंखों से ओझल हो गई।

तितली हर रोज आने लगी। दोनों बहुत देर तक खेलते रहते। अब तितली सुबह-सुबह जरूर आती। एक दिन नाहिदा ने तितली से कहा, "कल संडे हैं। मेरी छुट्टी है। कल जल्दी आना।"

सुबह हुई। तितली आ गई। दोनों बहुत देर तक खेलते रहे। एक सप्ताह गुजर गया। रविवार को तितली और नाहिदा बहुत देर तक खेलते रहे।

फिर सोमवार आया, पर तितली नहीं आई। नाहिदा कई बार आंगन में आई। मगर तितली नहीं आई। मंगलवार आ गया, तो नाहिदा ने तितली को देखा।

नाहिदा दौड़कर पास गई और कहा, "कल मैंने तुम्हें कहां-कहां नहीं खोजा। अब हर रोज आना।"

तितली ने मुसकराते हुए कहा, "अब मेरा इंतजार मत करना। मैं कुछ ही दिनों की मेहमान हूं।"

नाहिदा समझ नहीं पाई। बोली, "मैं कुछ नहीं जानती। तुम रविवार को सुबह से शाम तक मेरे साथ खेलोगी।"

तितली नाहिदा के हाथ के अंगूठे में जाकर बैठ गई। उसने नाहिदा से कहा, "मैं बूढ़ी हो चुकी हूं। मेरे पंख कमजोर हो गए हैं। रविवार तो बहुत दिनों बाद आएगा। तब तक मैं जीवित नहीं रहूंगी।"

नाहिदा चौंकी। उसने हैरानी से पूछा, "लेकिन तुम तो अभी बहुत छोटी हो। मुझसे भी छोटी।"

तितली ने हंसते हुए कहा,"इस दुनिया का प्रत्येक जीव केवल कुछ निश्चित समय तक ही जीवित रह सकता है। आयु का आकार से कोई संबंध नहीं है। अब देखो न। कौआ और तोता एक जैसे पक्षी हैं। मगर कौए की उम्र पंद्रह साल है और तोता अस्सी साल तक भी जीवित रह सकता है। आम के पेड़ और पीपल के पेड़ का जीवन भी अलग-अलग है। पीपल के पेड़ की आयु आम के पेड़ से कई गुना अधिक होती है।"

नाहिदा उदास हो गई। उसने पूछा, "तुम्हारा जीवन कितना है?"

तितली ने बताया,"एक से दो सप्ताह।"

"बस! ये तो बहुत ही कम है।" नाहिदा ने चौंकते हुए कहा।

तितली बोली, "जीवन की अवधि कुछ भी हो, मगर हर जीव की मौत निश्चित है। हर किसी को मरने से पहले कुछ ऐसे काम करने चाहिए, जिससे जीवन जीने का अर्थ पूरा हो सके। हम तितलियां अपने छोटे से जीवन को भी बड़े आनंद से जीती हैं। हम अपने बच्चों को जिम्मेदारियां देकर ही इस दुनिया से विदा लेती हैं।"

"जिम्मेदारी! आप तितलियों की भी कोई जिम्मेदारी होती है?" तितली ने बताया, "है न! हम फूलों के परागकण फैलाते हैं। फूलों के परागकण हमारे शरीर पर चिपक जाते हैं। जिन्हें हम इस धरती पर यहां-से वहां ले जाते हैं। हम जंगल बनाते हैं।"

नाहिदा चुपचाप तितली की बात सुन रही थी। तितली ने लंबी सांस लेते हुए कहा, "तुम्हारा साथ मुझे बहुत अच्छा लगा। बस तुम भी अपने जीवन में मुस्कराते रहना। अच्छे काम करना। कैसी भी परिस्थितियां हों, हिम्मत से काम लेना। निराश न होना। अच्छा। अब अलविदा!"

यह कहकर तितली उड़ गई। नाहिदा तितली को उड़ता हुआ देख रही थी। वह बोली, "मैं भी तुम्हारी तरह मुसकराती रहूंगी। मैं तितली की तरह मुस्कराती रहूंगी।"

सलमा ने नाहिदा को हिलाया। उसे जगाते हुए कहा, "मेरी तितली रानी। मुसकराने के लिए पहले नींद से जगना तो होगा।"

नाहिदा ने आंखें खोली तो सामने अम्मी को मुसकराते देख वह भी मुसकराने लगी। ●

रचनाकार को जानिए

मनोहर चमोली 'मनु' : शिक्षक होने के साथ-साथ बाल साहित्य में सक्रिय। कई कहानियों का भारतीय सहित कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। कई पाठ्य पुस्तकों में कहानियां शामिल हैं। शिक्षा और साहित्य में आलोचना के लिए जाने जाते हैं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

अलविदा संतूर के जादूगर

पंडित शिवकुमार शर्मा का जन्म 13 जनवरी, 1938 को जम्मू, भारत में गायक पंडित उमा दत्त शर्मा के घर हुआ था।

वह एक प्रख्यात भारतीय संतूर वादक थे। संतूर एक कश्मीरी लोक वाद्य है। एक साक्षात्कार में पंडित शिवकुमार ने बताया कि उनके पिता ने उन्हें तबला और गायन की शिक्षा पांच वर्ष की उम्र से आरंभ कर दी थी। उनके पिता ने संतूर वाद्य पर अत्यधिक शोध किया और फैसला किया था कि शिवकुमार को ऐसा प्रथम भारतीय बनाएंगे, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में संतूर पर महारत हासिल करेगा।

शिवकुमार ने 13 वर्ष की आयु से ही संतूर बजाना आरंभ किया और आगे चलकर अपना पहला कार्यक्रम मुंबई में 1955 में किया था।

शिवकुमार शर्मा संतूर के महारथी होने के साथ-साथ एक अच्छे गायक भी थे। भारत में संतूर को लोकप्रिय शास्त्रीय वाद्य बनाने में पूरा श्रेय शिवकुमार जाता है। इनका प्रथम एकल एलबम 1960 में आया। 1965 में उन्होंने निर्देशक वी शांताराम की नृत्य-संगीत के लिए प्रसिद्ध हिंदी फिल्म 'झनक झनक पायल बाजे' का संगीत दिया।

1967 में शिवकुमार ने प्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित हरिप्रसाद चौरसिया और पंडित बृजभूषण काबरा की संगत से एल्बम 'कॉल ऑफ द वैली' बनाया, जो शास्त्रीय संगीत में अद्भुत माना जाता है। बाद में शिवकुमार ने पं. हरि प्रसाद चौरसिया के साथ जोड़ी बनाकर कई हिंदी फिल्मों में संगीत दिया है। उन्हें 'शिव-हरि' नाम से प्रसिद्धि मिली। 1981 में 'सिलसिला' से शुरु करके, 'फासले' 'चांदनी', 'लम्हे' और 'डर' में उन्होंने संगीत दिया। पहली फिल्म के गाने 'रंग बरसे' ने उन्हें खूब प्रसिद्धी दी।

शिवकुमार शर्मा ने संगीत निर्देशक एस. डी. बर्मन के आग्रह पर 1965 की फिल्म 'गाइड' में लता मंगेशकर द्वारा गाए गए लोकप्रिय गीत 'मो से छल किए जाए' सहित सहित कई गानों में तबला भी बजाया। पर उनका ध्यान फिल्मी गीतों के बजाय क्लासिक संगीत पर रहा। एक बार उन्होंने कहा था, "शास्त्रीय संगीत मनोरंजन के लिए नहीं है। यह आपको ध्यान की यात्रा पर ले जाना है, ये तो महसूस करने की चीज है (इसे अनुभव करना होगा)।"

शर्मा को 1986 में 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार, 1991 में भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'पद्म श्री' और 2001 में भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया था।

शिवकुमार शर्मा ने मनोरमा से शादी की थी और उनके दो बेटे हैं। उनका बेटा राहुल भी एक संतूर वादक हैं, एक साक्षात्कार में, शिवकुमार शर्मा ने कहा था कि उन्होंने राहुल को अपने शिष्य के रूप में चुना, क्योंकि उन्हें लगा कि उनके पास भगवान का उपहार है।

शर्मा का 10 मई 2022 को 84 वर्ष की उम्र में कार्डियक अरेस्ट से निधन हो गया। वह पिछले कुछ महीनों से गुर्दे की विफलता से पीड़ित थे और नियमित रूप से डायलिसिस से गुजरते थे। उनका अंतिम संस्कार मुंबई में हुआ।

पंडित शिव कुमार को अंतिम विदाई देने के लिए फिल्म और संगीत जगत की बड़ी हस्तियां शामिल हुईं।

मनोज पांडे

स्वागत है नए जनरल

मनोज पांडे भारतीय सेना के 29वें जनरल हैं और वर्तमान सेनाध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं। इससे पहले उन्होंने पहले पूर्वी कमान के जनरल ऑफिसर-कमांडिंग-इन-चीफ और अंडमान और निकोबार कमांड के कमांडर-इन-चीफ के रूप में भी काम किया है। वह थल सेना प्रमुख बनने वाले कोर ऑफ इंजीनियर्स के पहले अधिकारी हैं।

जनरल मनोज पांडे का जन्म 6 मई 1962 को नागपुर में एक मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता डॉ. सी. जी. पांडे एक मनोचिकित्सक थे, तो मां प्रेमा, ऑल इंडिया रेडियो में एक उद्घोषिका थीं।

सोमालवार हाई स्कूल से स्कूली शिक्षा के बाद, मनोज जनवरी 1979 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) में शामिल हुए और उन्हें लीमा स्क्वाड्रन में नियुक्त किया गया, जहां उन्होंने विज्ञान स्नातक की उपाधि प्राप्त की। एनडीए से स्नातक होने के बाद, वह भारतीय सैन्य अकादमी में शामिल हो गए और उन्हें यहां एक अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया। बाद में उन्होंने कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग, पुणे में दाखिला लिया और सिविल इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी की डिग्री हासिल की।

मनोज पांडे को दिसंबर 1982 में कोर ऑफ इंजीनियर्स की एक रेजिमेंट बॉम्बे सैपर्स में नियुक्ती मिली। उन्होंने यूनाइटेड किंगडम में स्टाफ कॉलेज, केम्बरली में भी पढ़ाई की। पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद वह भारत लौट आए।

अब मनोज को पूर्वोत्तर भारत में एक पर्वतीय ब्रिगेड का ब्रिगेड मेजर नियुक्त किया गया। लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पदोन्नति के बाद, उन्होंने इथियोपिया और इरिट्रिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन में भी कार्य किया।

अपने 39 साल के सैन्य कैरियर मे कई महत्त्वपूर्ण पद संभालने के बाद 18 अप्रैल 2022 को, भारत सरकार ने उन्हें जनरल मनोज मुकुंद नरवने के स्थान पर अगले थल सेनाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। एक मई को उन्होंने पद भार संभाल लिया।

11 मई 2022 को जनरल मनोज पांडे ने सिख लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट के मानद कर्नल के रूप में पदभार संभाला। उन्हें लेफ्टिनेंट जनरल डीपी पांडे द्वारा बैटन और रेजिमेंटल अलंकरण प्रदान किया गया।

पांडे की 3 मई 1987 को नागपुर के सरकारी डेंटल कॉलेज और अस्पताल की स्वर्ण पदक विजेता अर्चना सालपेकर से शादी हुई। उनका एक बेटा है, जो भारतीय वायु सेना में एक अधिकारी है।

गुब्बारे की चाह में

गुब्बारे वाला जब भी आता है, अपनी मीठी बोली और रंग-बिरंगे गुब्बारों से बच्चों को लुभा लेता है। बच्चे उसके पीछे-पीछे लग जाते हैं। वह मुसकराते हुए प्यार से बच्चों के हाथों में गुब्बारा थमाता जाता है और सिक्कों से अपनी जेबें भरता जाता है। बच्चे खुश हो-होकर गुब्बारे लेकर अपने-अपने घरों को भागते जाते हैं और गुब्बारे वाला साइकिल डगराते धीरे-धीरे एक गली से दूसरी गली में चला जाता है। गुब्बारे उसकी साइकिल के हैंडल से तागों में बंधे हवा में इधर-उधर उड़ते रहते हैं।

गुब्बारे वाला आज भी आया है, एक नन्ही बच्ची जिसका नाम राधा है, काफी देर से ललचाई नजरों से गुब्बारे वाले को अपने दरवाजे की चौखट पर खड़ी-खड़ी देख रही है।

राधा गरीब परिवार की लड़की है। उसके पिता ठेले पर सब्जी बेचते हैं। वह अपने काम पर गए हैं और मां बीमार हैं। राधा मां की देखभाल और दवा इत्यादि देने के लिए पास बैठी थी, गुब्बारे वाले की आवाज सुनकर वह चौखट पर आई है।

राधा सोचती है घर में इस समय कितना खर्च है, जैसे दुकान से आटा, दाल, मसाले लाना है। और हां, उसे ध्यान आया कि मां की दवा भी तो लानी है। वह इतने खर्चों में कैसे कटौती करके मां से गुब्बारे के लिए पैसे मांगे?

वह मन ही मन निर्णय लेती है कि वह गुब्बारा नहीं खरीदेगी। और फिर गुब्बारे जल्दी ही फूट भी तो जाते हैं। उसके पापा तो कहते हैं कि गुब्बारे त्योहारों पर खरीदे जाते हैं, मेलों में खरीदे जाते हैं। ऐसे गुब्बारे खरीदना तो फिजूलखर्ची है।

इतना सब कुछ सोचने के बाद भी राधा का मन गुब्बारे लेने के लिए ललचाने लगा। असल में गुब्बारे अच्छे तो उसे भी लगते थे। वह सोचने लग गई, 'गुब्बारे सभी बच्चों को अच्छे लगते हैं, तभी तो सभी गुब्बारों को प्यार करते हैं।'

राधा अभी यह सोच ही रही थी कि उसने देखा, एक लड़का ने गुब्बारे वाले के हाथ में सिक्का थमाया और गुब्बारे वाला उसे जल्दी से जेब में डालकर लड़के को एक प्यारा सा गुब्बारा थमा दिया, पर वह सिक्का गुब्बारे वाले की जेब में न जाकर जमीन पर गिर पड़ा। वहीं नीचे जमीन पर राधा की काली गाय का गोबर में वह सिक्का बिना आवाज किए धंस गया। गुब्बारे वाले को सिक्के के नीचे गिरने की भनक तक नहीं लगी। वह साइकिल डगराते हुए आगे दूसरी गली में मुड़ गया।

अगले ही पल राधा दौड़कर गई और उस सिक्के को गोबर से निकाल लाई। फिर नल से पानी खोलकर उसे धो डाली। सिक्का चमक उठा। वह सोचने लगी, आज वह बिना मेला और त्योहार के ही गुब्बारा खरीदेगी, उसका मन बल्लियों उछल रहा था।

अचानक ही उसके दिमाग में यह बात आई कि कहीं सिक्के की चमक देखकर गुब्बारे वाला अपना सिक्का पहचान गया, तो क्या होगा।

उसने अगले ही पल सोचा, 'नहीं,नहीं ऐसा नहीं हो सकता, सिक्के पर उसका नाम थोड़े ही लिखा गया है। एक जैसे सिक्के तो बहुत होते हैं।' वह आज एक अच्छा सा गुब्बारा अवश्य खरीदेगी।

यह सोचकर राधा ने सिक्के को मुट्ठी में भींचा और दौड़ पड़ी गुब्बारे वाले के पास। जब वह गुब्बारे वाले के पास पहुंची, तो उसके पास बच्चों की भीड़ लगी थी गुब्बारे लेने के लिए। वह बारी-बारी से बच्चों को गुब्बारे दे रहा था। राधा उसके बगल में खड़ी हो गई और देखने लगी गुब्बारों के झुंड को। उसकी आंखें चमक उठीं कि वह नीला वाला गुब्बारा लेगी, जो साइकिल के हैंडल पर घंटी के पास तिरछा लहरा रहा है, हवा में।

वह अभी यह सोच ही रही थी कि गुब्बारे वाले की आवाज से वह चौंक उठी, "तुम्हें कौन सा गुब्बारा दे दूं बेटी ?"

राधा एकदम चुप हो गई, वह कुछ न बोल सकी। अचानक ही वह सोचने लग गई, 'नहीं-नहीं, मैं गुब्बारे नहीं लूंगी। यह पैसा मेरा नहीं है। मुझे इस पैसे के बदले में गुब्बारे लेने का कोई अधिकार नहीं है। मेरे पापा भी तो ऐसे ही गली-कूचों में ठेला लेकर पहुंचते होंगे न।'

राधा को गुब्बारे वाला बहुत ही प्रिय लग रहा था। उसके मन में यह बात आई कि अपने प्रिय लगने वाले को कभी धोखा नहीं देना चाहिए। वह भी गुब्बारे वाले को धोखा देकर गुब्बारा नहीं खरीदेगी। यह बिल्कुल अच्छी बात न होगी।

राधा अभी यह सोच ही रही थी कि तब तक गुब्बारे वाला अपने मन से ही एक गुलाबी रंग का गुब्बारा उसके हाथों में थमाते हुए बोला, 'बेटी, तुम शायद गुब्बारे पसंद नहीं कर पा रही हो। ये लो गुलाबी रंग का चटक गुब्बारा। ज्यादा बच्चे इसे ही पसंद कर रहे हैं, तुम्हें भी पसंद आ ही जाएगा।"

राधा ने गुब्बारा लेने से मना करते हुए कहा, 'अंकल जी, मैं गुब्बारा लेने नहीं आई हूं, वो क्या था कि मेरे दरवाजे पर आपका एक सिक्का जमीन पर पड़े गोबर के ढेर में गिरकर धंस गया था, आपको पता नहीं चल पाया था, मैं आपका यह सिक्का आपको देने आई हूं।"

यह कहकर राधा ने वह सिक्का गुब्बारे वाले के हाथ में थमा दिया और वहां से दौड़ती हुई अपने घर की ओर चल पड़ी।

गुब्बारे वाला उसे पुकारता ही रह गया, "बच्ची सुनो तो, एक गुब्बारा मेरी तरफ से इनाम में लेती जाओ।"

पर राधा ने उसकी बात अनसुनी कर दी। अब राधा का मन बहुत खुश था। आज भले ही वह गुब्बारा तो नहीं ले पाई थी, पर उसे महसूस हो रहा था कि उसके हाथों में ढेर सारे नीले, गुलाबी, हरे, पीले, बैंगनी गुब्बारे हैं और वे हवा में उड़-उड़कर उसे आसमान की ऊंचाइयों पर ले जा रहे हों। ●

रचनाकार को जानिए

कमलेश पाण्डेय 'पुष्प' : हिन्दी से स्नातकोत्तर की शिक्षा के पश्चात विभिन्न समाचार पत्र, पत्रिकाओं में उप संपादक के पद पर कार्यरत रहे। देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कहानिया, कवितायें व लेखों का प्रकाशन। कई आकाशवाणी केंन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। एक कहानी संग्रह 'असली गुल्लक' प्रकाशित।

नाना जी

रचनाकार को जानिए

डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना :
सम्प्रतिः अध्यापन से सेवानिवृत्त एवं स्वतंत्र लेखन, प्रकाशनः बाल साहित्य की 50 पुस्तकों का लेखन-संपादन, विशेषः हिंदी ग़ज़ल के प्रथम शोधकर्ता
पुरस्कार : उ. प्र. हिंदी संस्थान से "बाल साहित्य भारती"

नाना जी भई नाना जी।
हँसी-खुशी घर आना जी।।

याद करें हैं मम्मी जी,
उनको दरश दिखाना जी।।

मेरी नटखट मौसी को,
साथ यहाँ पर लाना जी।।

नए खिलौने हम सबको।
मेले में दिलवाना जी।।

दाँत अगर हों टूट गए।
तो रसगुल्ले खाना जी।।

महँगाई की मार पड़े।
तो फिर मत सहलाना जी।।

अपने रुपयों की थैली।
कहीं भूल मत आना जी।।

पंखा झट से जागा

जाड़े की छुट्टी में सोया,
पंखा जाग न पाया।
गर्मी आ गयी तब दादी को,
उस पर गुस्सा आया।।

बीत गये छह माह चलेगा,
अब तो काम न ऐसे।
घोड़े बेच के सोया है ये
कुम्भकरण के जैसे।।

बटन दबाया पंखे वाला,
कान जोर से ऐंठा।
बिजली का झटका पा करके,
पंखा झट उठ बैठा।।

गलती हुई तनिक दादी जी,
थर-थर काँपा बोला।
धीरे से अँगड़ाई लेकर,
फिर तेजी से डोला।।

सिर पर रखकर पैर फटाफट,
वह तेजी से भागा।
फैली हवा खूब तेजी से
आँधी जैसा लागा।।

दादी माँ ने खुश हो करके,
ताली खूब बजाई।
बोली, इसीलिये तो पुत्तर,
तुझे बुला कर लाई।।

रचनाकार को जानिए

अरविंद कुमार साहू : 16 पुस्तकें व 500 से अधिक रचनाएं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। अपूर्व उड़ान, मधुर सरस एवं जागरण जंक्शन समेत कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रहे।

सपना हुआ पूरा

थॉमस कप जीत गए

थॉमस कप, जिसे कभी-कभी विश्व पुरुष टीम चैंपियनशिप भी कहा जाता है, बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन (बीडब्ल्यूएफ) द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता है। 1948-1949 में पहली बार आयोजित टूर्नामेंट पहले हर तीन साल में आयोजित होता था। 1982 से हर दो साल में चैंपियनशिप आयोजित की जा रही है।

टूर्नामेंट के अंतिम चरण में 12 टीमें खिताब के लिए मुकाबले में उतरती हैं। थॉमस कप सही मायने में दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित नियमित रूप से आयोजित बैडमिंटन इवेंट हैं।

1948-1949 से अब तक आयोजित 32 थॉमस कप टूर्नामेंट में से केवल छह देशों ने खिताब जीता है। इंडोनेशिया सबसे सफल टीम है, जिसने 14 बार जीत हासिल की है। चीन, जिसने 1982 तक प्रतिस्पर्धा करना शुरू नहीं किया था, 10 खिताब के साथ दूसरे नंबर पर है। मलेशिया ने 5 खिताब जीते हैं। 2014 के फाइनल में मलेशिया को हराकर जापान थॉमस कप जीतने वाला चौथा देश बना था। 2016 के फाइनल में इंडोनेशिया को हराकर थॉमस कप जीतने वाला डेनमार्क पहला यूरोपीय और पांचवां देश बन गया। यह पहला और एकमात्र मौका था जब किसी गैर-एशियाई टीम ने चैंपियनशिप जीती। अब भारत ने 2022 में खिताब धारक इंडोनेशिया को हराकर अपना पहला खिताब जीता है।

8 से 15 मई तक थाईलैंड के राजधानी बैंकॉक में 32वें थॉमस कप का आयोजन हुआ। 15 मई 2022 की तारीख बैडमिंटन में भारत की ऐतिहासिक जीत के लिए दर्ज हो गई है। इस दिन भारत ने बैडमिंटन के वर्ल्ड कप कहे जाने वाले थॉमस कप में इंडोनेशिया को 3-0 से हराया। यह जीत इसलिए भी ऐतिहासिक है कि 73 साल के इतिहास में भारत ने पहली बार इस कप को अपने नाम किया है।

इंडोनेशिया से जीतकर भारत ने उससे पाने वाली हार के सिलसिले

इस जीत पर ऑल इंग्लैंड ओपन बैडमिंटन चैंपियनशिप जीतने वाले पहले भारतीय दिग्गज प्रकाश पादुकोण ने कहा कि यह जीत किस्मत के दम पर नहीं मिली, बल्कि भारतीय टीम ने अपनी मेहनत के दम पर खिताब जीता है। हमने सिर्फ इंडोनेशिया को ही नहीं, बल्कि पूर्व चैंपियन मलेशिया और डेनमार्क को भी खिताबी अभियान के दौरान हराया।

थॉमस कप

थॉमस कप प्रतियोगिता, सर जॉर्ज एलन थॉमस का विचार था, जो 1900 के दशक की शुरुआत में एक बेहद सफल अंग्रेजी बैडमिंटन खिलाड़ी थे। वह टेनिस के डेविस कप और 1930 में पहली बार आयोजित फुटबॉल विश्व कप से प्रेरित थे। उनके खूब विचार करके इस प्रतियगिता के लिए रूपरेखा तैयार की।

1939 में इंटरनेशनल बैडमिंटन फेडरेशन (अब बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन) की आम बैठक हुई। उसी वर्ष, सर जॉर्ज ने थॉमस कप कराने का विचार सबके सामने रखा, जिसे आधिकारिक तौर पर द इंटरनेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप चैलेंज कप के रूप में जाना गया।

इसके कप को लंदन के एटकिन ब्रदर्स द्वारा 40000 डॉलर की लागत से तैयार किया गया था। कप 28 इंच ऊंचा और 16 इंच चौड़ा है और इसमें तीन भाग होते हैं : एक कुर्सी (कुर्सी), एक कटोरा, और एक खिलाड़ी की आकृति वाला ढक्कन। पहला टूर्नामेंट मूल रूप से 1941-1942 में होना था लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के कारण इसमें देरी हुई। सर जॉर्ज का सपना 1948-1949 में साकार हुआ जब दस राष्ट्रीय टीमों ने पहली थॉमस कप प्रतियोगिता में भाग लिया था।

महिलाओं के लिए भी बैडमिंटन की टीम प्रतियोगिता उबेर कप आयोजित होती है।

को तोड़कर इतिहास बदल दिया।

थॉमस कप 2022 में भारत ने मलेशिया और डेनमार्क जैसी टीम को हराकर पहली बार फाइनल में जगह बनाई थी। इसके बाद खिताबी मुकाबले में 14 बार की रिकॉर्ड चैंपियन इंडोनेशिया को भी हराकर वे चैंपियन बन गए। भारतीय बैडमिंटन का यह सबसे गौरव के क्षण हैं।

इस ऐतिहासिक जीत के हीरो लक्ष्य सेन, किदांबी श्रीकांत, सात्विक साईराज रंकी रेड्डी और चिराग शेट्टी रहे। इन सबने मिलकर सपने को साकार कर दिया।

इस जीत के बाद भारतीय टीम को जबरदस्त स्वागत मिला। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारतीय टीम को टेलीफोन करके व्यक्तिगत रूप से बात की और बधाई दी। ●

उनके अमरूद

मयंक अपने दादा-दादी के साथ छत पर बैठा होमवर्क कर रहा था। दादा जी अखबार पढ़ रहे थे और दादी जी लौकी छील रही थीं।

अचानक पड़ोस के घर की छत पर बंदरों का झुंड आया। पड़ोसियों के लिए यह नई बात नहीं थी। उनके यहां बंदर आते रहते थे और पेड़ों पर लगे फल खा-पीकर चले जाते।

बंदर पके हुए अमरूद खाने लगे। आधे खाते, आधे फेंकते। दादी जी की निगाहें बंदरों पर पड़ी और उनके मुंह से निकला, "खाओ-खाओ। खूब मजे से अमरूद खाओ।"

यह सुनकर मयंक बहुत खुश हुआ। सोचने लगा कि नीचे से फल लाकर मैं भी बंदरों को खिलाऊंगा। बड़ा मजा आएगा।

मयंक छत से उतरकर रसोई में आया और फलों की टोकरी में से केले का गुच्छा उठाकर दादी जी के पास ले आया। मयंक ने प्रसन्न होते हुए कहा, "लो दादी जी, यह केले का गुच्छा। आप भी बंदरों को खिलाओ।"

"नहीं-नहीं, उन्हें अपने केले नहीं देने हैं। उन्हें तो उनके अमरूद खाने दे।" दादी जी ने टालते हुए कहा।

"फल तो फल ही होते हैं, चाहे उनके हों या हमारे! उनके फल और हमारे फल का मतलब नहीं समझा दादी जी?" मयंक ने जिज्ञासा से पूछा।

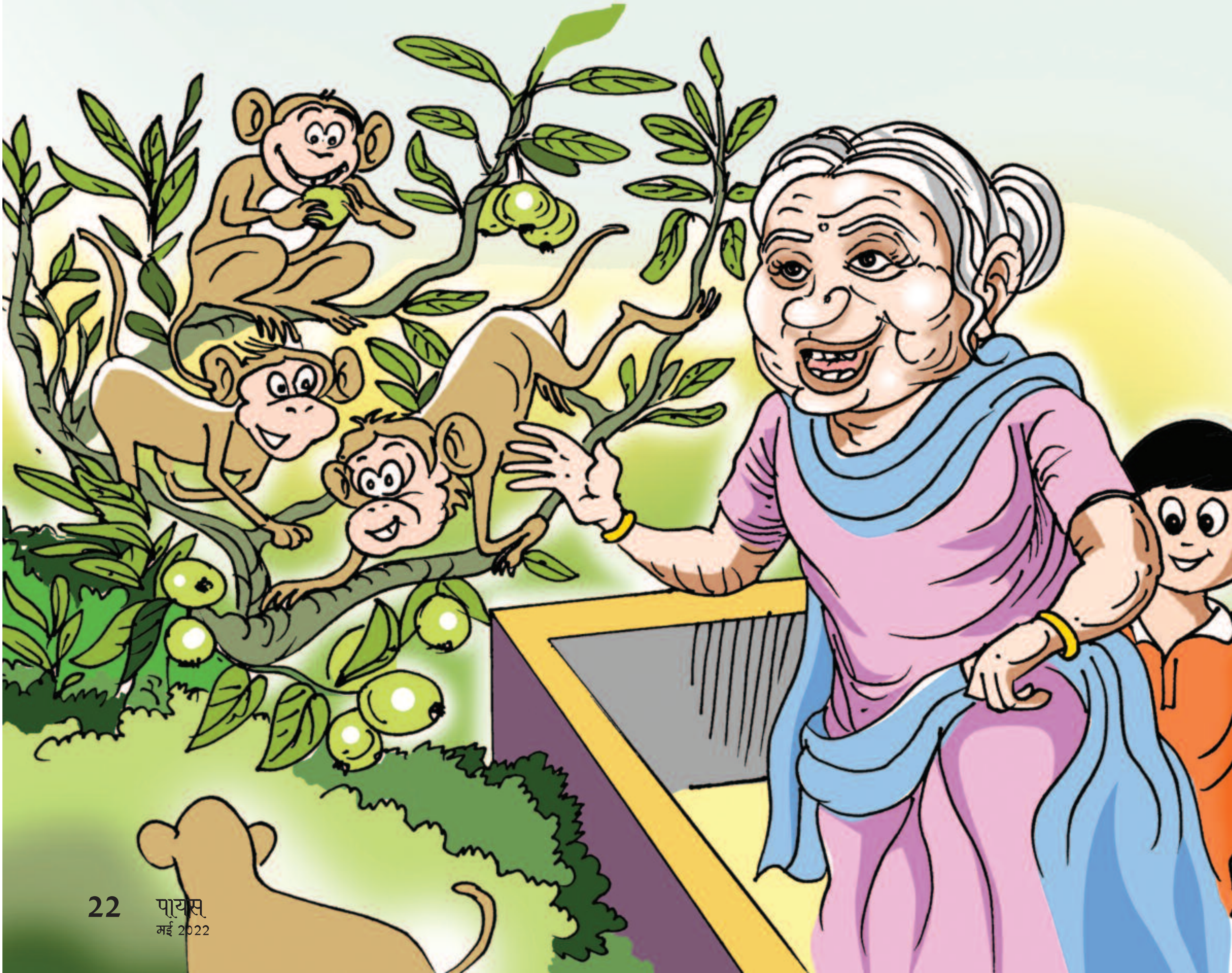

"छोटा मुंह बड़ी बात न कर। जा टोकरी रसोई में रख आ और अपनी पढ़ाई कर।" दादी जी ने कहा।

मयंक फलों की टोकरी के साथ अपनी किताबें लेकर नीचे आ गया। दादी को लगा कि मयंक उनकी बात से नाराज होकर नीचे चला गया है।

दादी जी को अपने कहे शब्द याद आने लगे, 'नहीं-नहीं, उन्हें अपने केले नहीं देने हैं। उन्हें उनके अमरूद खाने दो।'

दादी का मन खिन्न हो गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने मयंक को आवाज लगाई कि फल की टोकरी लेकर छत पर आ।

मयंक दुबारा फल की टोकरी लेकर आया।

दादी केले के गुच्छे में से केले निकालकर बंदरों को देने लगी। मयंक भी दादी जी के पास आकर बंदरों को केले खिलाने लगा। दादी ने मयंक को छाती से लिपटा लिया।

दादा जी दोनों को देखकर खुश हो रहे थे। ●

रचनाकार को जानिए

तरुण कुमार दाधीच : पिछले तीन दशक से साहित्य के क्षेत्र से जुड़ाव। बाल साहित्य पर सात एवं हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में भी अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित राज्य सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में 2009 में सम्मानित

रचनाकार को जानिए

डॉ.सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी : अब तक 11 पुस्तकें प्रकाशित , जिनमें छः बाल साहित्य पर केन्द्रित। रचनाएं अनेक राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं, शोध ग्रन्थों, राष्ट्रीय संकलनों मे प्रकाशित, देश-विदेश की अनेक संस्थानों से सम्मानित।

कविता

चन्दा मामा

चन्दा मामा बड़े ही नटखट,
रूप बदलते रहते झटपट।
बादल उनको खूब भगाते,
लम्बी-लम्बी दौड़ लगाते।
चुप रह करके बनते मौनी,
कभी खेलते आँख मिचौनी।
हम उन्हें हर बार बुलाते,
लेकिन वे कभी न आते।
अब मन में हमने ली ठान,
भरकर जाऊँ स्वयं उड़ान।

रट्टू राम

रचनाकार को जानिए

इंद्रजीत कौशिक : पिछले 40 वर्षों से बाल साहित्य के क्षेत्र में रचना कर्म। एक पुस्तक प्रकाशित हुई मूछों वाले मामा जी के नाम से जिस पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य का शंभू दयाल सक्सेना पुरस्कार मिला। देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन।

कद के छोटे मुन्ना राजा
पक्के रट्टू राम ,
अपना पाठ सदा ही रटते
बनकर तोताराम ।

'पढ़ते जाओ साथ में सीखो'
पापा जी सिखलाते ।
घामड़ बनकर मुन्ना राजा
सर अपना खुजलाते।।

दिवस परीक्षा के जब आए
मुन्ना जी चकराए ।
रटारटाया भूल गए सब,
देखें दाएं बाएं ।।

कान पकड़ कर कसम खा रहा,
नहीं रटूँगा भाई।
भेद गया मैं जान सीखने,
करनी पड़े पढ़ाई।।

ईद

ईद आई
खुशियाँ लाई
गले मिले
चेहरे खिले
दी बधाई

सबको भाई
शिकवे छोड़े
दिल जोड़े
अमीर गरीब
सब करीब

भेद छूटे
बंधन टूटे
अपनों की
सपनों की
कराए दीद
प्यारी ईद।

रचनाकार को जानिए

शिवचरण सरोहा : दिल्ली प्रशासन में अध्यापक। विविध पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य, लघुकथाएं एवं कहानियां प्रकाशित। हिंदी अकादमी, दिल्ली एवं बाल साहित्य संस्थान, उत्तराखंड से पुरस्कृत।

कौन सिखाता मुझे

रोहन बहुत उदंड था। वह वही करता, जो उसका दिल चाहता।

एक दिन वह चलती रोड पर इधर-उधर पत्थर फेंक रहा था, तो एक कुत्ता रोहन पर भौंकने लगा। रोहन को यह अच्छा नहीं लगा। वह कुत्ते के पास जाकर, एक छड़ी से कुत्ते को पीटने लगा। उसने अपना सारा गुस्सा कुत्ते पर निकाल दिया।

मित्तल जी, मंदिर के दर्शन कर लौट रहे थे, कुत्ते को रोता हुआ देख, वह रोहन के पास गए और कहा "बेटा, इस कुत्ते को क्यों मार रहे हो? कितनी तकलीफ हो रही होगी इसे।"

"तकलीफ! अरे, यह तो जानवर है, जानवर।" रोहन ने कहा ।

"जानवर को क्या तकलीफ नहीं होती। देखो, खून भी बह रहा है। इसे मारने की वजह जानना चाहता हूं?"

"यह मेरे ऊपर भौंक रहा था।"

"भौंक रहा था? तो भौंकने की इतनी बड़ी सजा? बेटा, कुत्तों का काम ही भौंकना है।"

उन्होंने अपनी जेब से रूमाल निकाल कर, कुत्ते के जख्म पर बांध दिया, और खड़े होकर, समझाने के तौर पर रोहन से कहा, "बेटा, हमें अपने जीवन में वही कार्य करने चाहिए, जिससे सब को खुशी प्राप्त हो, जब तुम अच्छे काम करोगे, तो वहीं तुम्हे आगे बढ़ाएंगे। हमें कोई भी काम ऐसा नहीं करना चाहिए, जिससे दूसरों को तकलीफ हो।"

मित्तल जी की बात खत्म भी न हो पाई, रोहन गर्दन झटक, आगे बढ़ गया। मित्तल जी रोहन को देखता रह गए।

रोहन ने कभी किसी की सुनना नहीं जाना। अपने साथ-साथ बाकी अपने साथी बच्चो को भी वही करने को कहता, जो वह चाहता। अगर कोई बच्चा नहीं मानता, तो रोहन उनसे झगड़ा करता और अपनी टीम से निकाल देने की धमकी देता। चाहते हुए भी वे ग्रुप छोड़ नहीं पाते, परेशान रहने के बाद भी बच्चे रोहन का साथ देते ।

रोहन की शैतानियां दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी, वह कभी किसी के घर की लाईट पत्थर फेंक तोड़ देना, तो कभी भागते हुए के टांग अड़ा देना और कभी किसी बच्चे के कपड़े ज्यादा सफेद हुए तो, इंक छिड़क देना।

यहां तक कि अगर कोई व्यक्ति किसी के घर का पता मालूम करता, चाहता, तो गलत बताकर, उसके जाने के बाद वह हंसता।

एक छड़ी हमेशा रोहन के हाथ में

रहती। जहां किसी बच्चे ने उसकी बात नहीं मानी, तो सटाक से उसके ऊपर जड़ देता।

मयंक ने दोस्ती की खातिर रोहन को एक बार समझाना चाहा, "भाई, जीवन ईश्वर की अमूल्य देन है, इसको क्यों व्यर्थ में बेकार कर रहे हो। यह मत भूलो समय सदा एक सा नहीं रहता, जैसा हम बोते है, वैसा ही काटते हैं।"

लेकिन रोहन पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ और मयंक के इतना कहने मात्र से ही, छड़ी उसके ऊपर भी जड़ दी और कहा, "तू होता कौन है मुझे समझाने वाला?"

"मैं वही हूं मेरे दोस्त, जब तुम्हें एक लड़के ने नदी में धकेल दिया था, मैंने ही तो तुम्हारी जान बचाई थी। भूल गए वह सब?"

"चल-चल, बड़ा आया मेरी जान बचाने वाला।" कहकर रोहन आगे बढ़ गया।

धीरे-धीरे उसके ग्रुप के बच्चे उसका साथ छोड़ने लगे और अपना ग्रुप बना लिया, अब रोहन अकेला पड़ गया। लेकिन अपनी गलती का अहसास नही हुआ।

एक दिन सब बच्चों का ग्रुप, बराबर के पार्क में खेल रहे थे। रोहन बालकनी से बाहर झांक रहा था, उसकी नजर बगीचे में खेलते हुए उन बच्चों पर पड़ी, जिन्होंने उसका साथ छोड़ दिया था, देखकर उसे अच्छा नहीं लगा, वह सोचता था कि उसके बिना किसी की गाड़ी नहीं चलेगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ?

कुछ सोचने के बाद गुस्से से रोहन ने छड़ी उठाई और फटाफट सीढ़ियां उतरकर, पार्क की तरफ भागा और उन बच्चों के पास पहुंच गया। आज रोहन को देखकर कोई भी नहीं डरा, क्योंकि रोहन अकेला पड़ गया था। एक लड़के ने कहा, "दोस्त, हम सब आज तुम पर भारी पड़ेंगे। अच्छा होगा, तुम यहां से चले जाओ। छड़ी हमें भी उठा सकते हैं।"

रोहन ने गुस्से से, एक पत्थर पर जोर से पैर मारा। ऐसा करने से उसकी खुद की चप्पल भी टूट गई और पैर में भी चोट लग गई ।

वह लंगड़ाता हुआ वापस जा रहा था, तो उसे देख मयंक ने आवाज लगाते हुए कहा, "रोहन ज्यादा लगी तो नहीं?"

मंयक की बात का जवाब ना देकर रोहन थूका और एक पत्थर उठाकर पलटकर वार किया और चला गया।

एक बूढ़ी मां, जो बाहर बैठकर अपना समय व्यतीत करती थी, वह हर रोज रोहन की उद्दंडता देखती थी। आज वह, रोहन को समझाने के इरादे से चबूतरे पर बैठी थी। अम्मां ने रोहन को पास बुलाया और कहा, "बेटा, क्या नाम है तुम्हारा?"

रोहन गुस्से से बोला, "क्यों, क्या करोगी जानकर?"

बेटा, आपकी कमीज तो बहुत साफ और चमकदार हैं, आपकी मम्मी कौन सा वाशिंग पाउडर इस्तेमाल करती हैं?" इतना कह उन्होंने रोहन की शर्ट पर हाथ फेरा, तो शर्ट गंदी हो गई।

रोहन को यह अच्छा नहीं लगा, और गुस्से से बोला, "आपने मेरी शर्ट गन्दी कर दी।"

अम्मा ने कहा, "तो क्या हुआ? आप भी तो यही करते हो, तो आपको क्यों बुरा लगा? जब आप दूसरे के कपड़ो पर इंक फेंकते हो तब!" इतना कहते ही उनके हाथ से उनका अपना खाने का टिफिन गिर गया और सब्जी इधर-उधर बिखर गई।

रोहन यह देख गुर्राया और कहा, "आपने सब गंदा कर दिया।"

अम्मां ने कुछ मुसकराकर बोला, बेटा, "इसमें इतना परेशान होने वाली क्या बात है? तुम्हें भी तो ऐसा करने से खुशी मिलती है, लेकिन आगे चलकर यह दुख का कारण होगा। अच्छा किया उन बच्चो ने, जो तुम्हारा साथ छोड़ दिया। बेटे, मनुष्य का आचरण ही बताता है वह कैसा है। अच्छे बनो अच्छे कर्म करो। अभी तो तुम बच्चे हो, जिंदगी में बहुत कुछ सीखना है।"

रोहन चुप खड़ा पैर के अंगूठे से जमीन कुरेदता रहा ।

"क्या तुम्हारी मां ने कुछ नहीं सिखाया?"

"मां, मेरी मां नहीं है! मां का प्यार क्या होता है, मैं नहीं जानता। मैंने तो मां को सिर्फ फोटो में देखा है। इसीलिए कौन सिखाता मुझे?" इतना कहते उसकी आंखें भर आईं।

"ओह! बूढ़ी अम्मां ने रोहन के सिर पर हाथ फेर, सीने से लगाकर बोलीं, बेटा हम अकेले जन्म लेते हैं, अकेले मरते हैं, लेकिन प्यार और दोस्ती के जरिए एक वातावरण का निर्माण करते हैं, जिसमे हम अकेले नहीं होते। तुम्हारा आचरण अच्छा होगा तो एक ना एक दिन, यह सब तुम्हारे साथ होगें।"

रोहन गर्दन लटकाए, चुपचाप सुनता रहा, आगे से ऐसा न करने का वादा किया और सीढियां चढ़ गया। ●

रचनाकार को जानिए

मधु गोयल : पिछले 15 सालों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 200 कहानियां, कविताएं व लेख (बच्चों और बड़ों की) निरंतर देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित।

एक असाधारण वैज्ञानिक

प्रोफेसर वेंकटरमन रामाकृष्णन

प्रोफेसर वेंकटरमन का जन्म 1952 में तमिलनाडु के कुड्डालोर जिले के चिदंबरम गांव में हुआ। बचपन में इन्हें वेंकी कहकर बुलाते थे। इनके पिता सी.वी, रमन व माता राजलक्ष्मी दोनों वैज्ञानिक थे। इनके पिता बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विद्यापीठ में जीव, रसायन शास्त्र के शिक्षक थे।

अंतरराष्ट्रीय जगत के वैज्ञानिक विद्यापीठ में आया-जाया करते थे, इसीलिए उनसे उनका परिचय बचपन में ही हो गया था।

इस प्रकार वेंकट को बचपन में ही उच्च शिक्षा का वातावरण मिला। तीन वर्ष की आयु में वह पिता के साथ बड़ोदा आ गए थे। वेंकटरमन की प्राथमिक, माध्यमिक, और उच्च माध्यमिक शिक्षा बड़ौदा के जीसस एंड मैरी कॉन्वेंट स्कूल में हुई। सातवीं कक्षा में उनका ध्यान पढ़ाई से भटक गया था और वे घटिया उपन्यास पढ़ने में लग गए थे। उनके अध्यापक फर्नांडीस ने तब उनके चौथी कक्षा में पूर्व अध्यापक रहे गोबिंद राज से इस बारे में चर्चा की। दोनों ने मिलकर उनकी काउंसलिंग की और उन्हें भटकाव से बचाया। उनके जीवन में कई बेहतरीन अध्यापक आए जैसे फर्नांडीस, गोबिंदराज, टी.सी.पटेल, एसडी मैनेनिका जिन्होंने उनके चरित्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ड्राइंग टीचर ने एक बार ड्राइंग बनाने में लैंडस्केप बनाने के लिए कहा, तो इन्होंने पूरी शीट को ब्लैक कर दिया और कहा, 'दिस इज ए लैंडस्केप ऑन ए मूनलैस नाइट।'

जब वे 16 वर्ष के थे, तो उन्होंने उनसे एनटीएससी की बड़ौदा से परीक्षा दी और अगले वर्ष एनटीएससी से उन्हें छात्रवृत्ति के लिए चुना गया।

1971 में सियाजी राव यूनिवर्सिटी से बीएससी भौतिक शास्त्र में प्रथम श्रेणी में पास की। उन्होंने प्रीस्कोलर एग्जाम और एनटीएससी दोनों एक साथ क्लियर किए थे, जो उनकी विलक्षण प्रतिभा को दर्शाता है। सन 1975 में इनकी शादी वेरा रोसेनबेरी से हुई जो कि एक लेखिका थीं।

24 वर्ष की आयु में सन 1976 में अमेरिका की ओहियो यूनिवर्सिटी से पीएचडी (फिजिक्स) की डिग्री और छात्रवृत्ति पाई।

यहां से इनके कैरियर का निर्णायक मोड़ शुरू हुआ। उन्होंने अपने फेवरेट सब्जेक्ट जीव विज्ञान में स्नातक के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया से दो वर्ष में डिग्री ली। कोशिका में 'प्रोटीन का निर्माण करने वाले राइबोसोम की संरचना और कार्य का अध्ययन' जैसे जटिल विषय को इन्होंने शोध का विषय बनाया।

पीटर मुर के येल विद्यापीठ में इन्हें राइबोसोम पर अनुसंधान के लिए पोस्ट डॉक्टरेट फैलोशिप मिली। 1983 से 1985 तक राइबोसोम क्रिस्टलोग्राफी का गहन अनुसंधान कार्य किया।1995 में उटाह विद्यापीठ में जीव रसायन शास्त्र के अध्यापक

पद पर 4 साल तक कार्य किया। उन्होंने प्रोटीन के घटक, पृथक्करण, उनकी संरचना पर उल्लेखनीय कार्य किया। इन्होंने सरल शब्दों में राइबोसोम को प्रोटीन बनाने वाला कारखाना कहा। ये गुण सूत्रों से संदेश लेते हैं। सभी कोशिकाओं में प्रोटीन की अहम भूमिका होती है। ये प्रोटीन 20 से भी अधिक अमीनो एसिड श्रृंखला से मिलकर असंख्य श्रृंखलाएं बनाते हैं। राइबोसोम द्वारा निर्मित प्रोटीन का कार्य ऑक्सीजन की हिमोग्लोबिन को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना, आंखों में प्रकाश रैडोपसीन प्रोटीन से सम्प्रेषित होता है और त्वचा में कॉलेजन नामक प्रोटीन इससे ही बनता है।

वे निरंतर प्रयोगों में लगे रहे। राइबोसोम क्या है? प्रोटीन निर्माण में इसका क्या योगदान है? राइबोसोम की संरचना का परत दर परत उद्घाटित करने के लिए क्रिस्टलोग्राफी का सहारा लिया, जो राइबोसोम की हजारों गुणा बड़ी छवि सामने लाता है।

इस मैक्रोमोलीक्यूलर अध्ययन के पश्चात उन्होंने बताया कि एक कोशिका में हजारों राइबोसोमस होते हैं, ये या तो एंडोप्लास्मिक रेटिकुलम से चिपके होते हैं या फिर साइटोप्लाज्म में तैरते रहते हैं। 25 नैनोमीटर का एक राइबोसोम होता है। एक नैनोमीटर यानी 1 मिलीमीटर का दस लाखवां हिस्सा। गुणसूत्रों से संदेश लेकर ये राइबोसोम प्रोटीन बनाते हैं।

वेंकट ने राइबोसोम की परमाणु संरचना और आणविक स्केल पर अनुसंधान किया। अपने हजारों छात्रों और युवा शोधकर्ताओं को सरल तरीके से बताया कि डीएनए सूक्ष्म सूचनाओं को संजोने वाला मानो टेप रिकॉर्डर है और आरएनए इसे प्ले करने का जरिया।

विदेशी आसमान में ऊंची उड़ान भरने वाले महान वैज्ञानिक प्रोफेसर वेंकटरमन रामकृष्णन भारत में शोध संभावनाओं के बारे में अत्यंत आशान्वित हैं। उनका सपना हैं, 'मैं मरने से पहले बेंगलुरु जाने वालों की लंबी लाइन देखना चाहता हूं।' ●

विशिष्ट उपलब्धियां...

● 2004 में रॉयल सोसायटी, लन्दन के फेलो बने।

● मेंबर ऑफ यूएस नेशनल एकेडमी ऑफ सायन्स सोसाइटी के सदस्य बनाए गए।

● 2008 ट्रिनिटी कॉलेज कैंब्रिज में फेलोशिप के लिए चुना गया।

● 2009 में प्रोफेसर की उपाधि से नवाजे गए।

● 7 अक्टूबर, 2009 में अमेरिका के थॉमस स्टीज़ और इजरायल की एडा योनाथ के साथ रसायनशास्त्र का नोबेल पुरस्कार मिला।

● प्रोफेसर वेंकटरमन सातवें भारतीय व तीसरे तमिल मूल के वैज्ञानिक हैं, जिनको नोबेल पुरस्कार मिला।

● 2010 में राष्ट्रपति से पद्म विभूषण से सम्मानित हुए।

● 2012 में मोलेक्युलर बायलॉजी से नया साल सम्मान मिला।

● 2015 से 2020 तक रॉयल सोसाइटी के अध्यक्ष रहे।

● वह कहते हैं, "मैं भारत में पैदा हुआ और बड़ा हुआ हूं, पूर्णतया शाकाहारी हूं। भारतीय संगीत विशेष रूप से कर्नाटक संगीत सुनना पसंद करता हूं।"

● उनकी लाइब्रेरी में 30-40 प्रतिशत भारतीय वैज्ञानिकों की अंग्रेजी में लिखी पुस्तकें तथा कर्नाटक संगीत के रिकार्ड व पुस्तकें हैं।

रचनाकार को जानिए

डॉ. शील कौशिक : एमएससी, एलएलबी, एम.एच.एम (होम्योपैथी)। प्रकाशित पुस्तकें : 30 (मौलिक : 21, सम्पादित : 5, अनुवादित : 3, लेखिका पर पुस्तक-1)। कुछ के नाम : बचपन के आईने से, धूप का जादू, करें तो क्या करें, माशी की जीत, बालकविता-संग्रह : बिल्लो रानी।

भविष्य के सितारे

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, रेनू मंडल जी ने

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

हिमांशु महरा

नाम : हिमांशु महरा
उम्र : 12, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

नेंसी पांडे

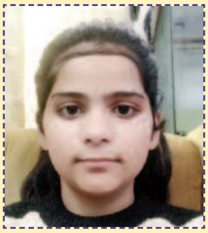

नाम : नेंसी पांडे
उम्र : 12
कक्षा : 8
स्कूल : आर.एस.के.वि., वेस्ट विनोद नगर, दिल्ली।

मेरे जीवन में पुस्तकालय

प्रथम पुरस्कार

शब्दों की ताकत
एक अनमोल खजाना है,
किताबों में बसा हर एक शब्द
हमें अपने भीतर समाना है,
जिंदगी में सबसे अच्छी दोस्त
कोई और नहीं किताब है।
पुस्तकें ज्ञान का भंडार है,
पुस्तकों से प्रश्न मिलते हजार हैं,
शब्दों में बसा संसार है,
विचारों का आविष्कार है,
अल्फाजों का प्यार है,
इसमें लिखा हर एक
लफ्ज़ आपको समझाना है,
मेरे जीवन में पुस्तकालय का महत्त्व
आपको बताना है,
शब्दों की ताकत
एक अनमोल खजाना है,
किताबों में बसा हर एक शब्द
हमें अपने भीतर समाना है।।

नाम : आईशा कौर
उम्र : 13, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल,
ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

ये वाली, नहीं ये वाली, वाह ! इस किताब में कितना अच्छा चित्रण कर रखा है, मुझसे इतनी बड़ी किताब नहीं पढ़ी जाती, ये छोटी किताब कितनी सुंदर है, मैं इंग्लिश किताब पढ़ूंगी, मैं हिंदी वाली, मैं तो सिर्फ कला वाली किताबें देखूंगी।

बस, पुस्तकालय में जाते ही सभी साथी पहले तो अधिक समय तक किताबों का चयन करने में ही व्यस्त हो जाते हैं, फिर जैसे ही पुस्तकालय का समय खत्म होता है, सभी साथी अपनी कक्षा की ओर रवाना हो जाते।

पुस्तकालय हर एक विद्यार्थी के जीवन का एक अहम हिस्सा है। पुस्तकालय में प्रवेश करते ही मेरा मन पुस्तकों को देखकर आकर्षित और नई-नई किताबों को पढ़ने के लिए उत्साहित होता है।

पुस्तकालय में नई-पुरानी किताबों के साथ ही दुर्लभ किताबें उपलब्ध होती हैं, जो बाजार में आसानी से नहीं मिल पातीं। पुस्तकों में बसा हर एक शब्द हमारे मन को अत्यंत प्रसन्न करता है जिससे कि हम अपनी भावनाओं को सरलता से दूसरे व्यक्ति के सामने प्रकट कर सकें।

पुस्तकालय में जाकर हम अपने ज्ञान की वृद्धि कर पाते हैं। पुस्तक वो कीमती धन है, जो प्रत्येक समस्या हल कर देती है और हमारे मस्तिष्क को शांति का अनुभव प्राप्त कराती है। पुस्तकों का हमारे जीवन शैली में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। मेरे जीवन में पुस्तकालय का महत्त्व सबसे अधिक है।

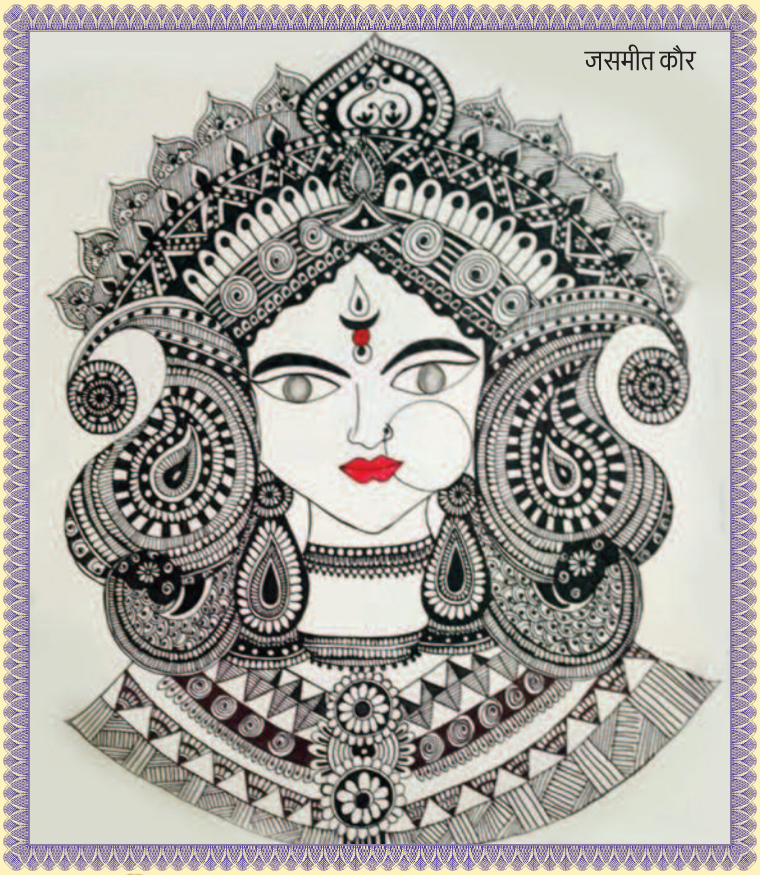
जसमीत कौर

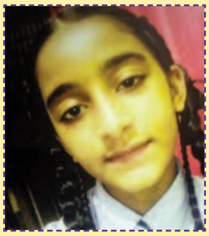
नाम : जसमीत कौर
उम्र : 12, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

नाम : वरेण्य
उम्र : 11
कक्षा : 6
स्कूल : विश्व भारती पब्लिक स्कूल, उत्तर प्रदेश

नाम : अमनदीप सिंह
उम्र : 16, कक्षा : 10
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

वरेण्य

अमनदीप सिंह

धरा को सजाएँ

चलो धरा को और सजाएँ
हर दिन एक पेड़ लगाएँ,
हरी-भरी धरती माता को
फूल के सुंदर गहने पहनाएं।

पेड़ों से है मिलती छाया
यही तो है प्रकृति की माया,
प्रदूषण को दूर भगाएँ
पर्यावरण को शुद्ध बनाएँ।

चलो धरा को और सजाएँ
हर दिन एक पेड़ लगाएँ।

नाम : श्रीयांशी मंद्रवाल
उम्र : 15, कक्षा : 10,
स्कूल : जी.जी.आई सी, पौड़ी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

नाम : हरमनदीप सिंह
उम्र : 10, कक्षा : 4,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

भाई-भाई-भाई,
बढ़ गई महंगाई,
नीबू कहता, मुझे हाथ लगाओ ना,
मिर्ची कहती, मुझे कुछ दिन खाओ ना,
तेल कहता, मुझ में सब्जी पकाओ ना,
सिलेंडर कहता, मुझ पर आग लगाओ ना,
दाल कहती, मिलूंगी मैं तुम्हें गुरुद्वारा में ,
आटा भी अब टाटा करता दिखता है।
गरीब आदमी भूखे पेट सोने को मजबूर है,
इसमें गरीब आदमी का क्या कसूर है,
यह सब भ्रष्ट नेताओं की करतूत है,
पेट्रोल-डीजल कहते टंकी फुल न कराओ,
महंगाई पर कोई कंट्रोल नहीं सरकार का।
कहते हैं कि भारत का पूरी दुनिया में डंका बजता है,
लेकिन मुझे लगता है कि भारत दूसरा लंका है।

नाम :अंशदीप कौर
उम्र : 13, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

डर हुआ छू-मंतर

ऋतु कुमारी
उम्र : 16, कक्षा : 10

मैं 10वीं क्लास में पहुंच गई थी, पर मुझे एहसास नहीं था कि मुझे बोर्ड का पेपर देना हैं। मुझे लगता था कि हमारे बोर्ड के पेपर नहीं होंगे, क्योंकि कोरोना महामारी के चलते पिछली बार यानी 2021 में बोर्ड के पेपर नहीं हुए थे। मैं तो पेपर के दो महीने पहले तक सोच रही थी कि अभी भी समय है, हमारे पेपर रद्द हो जाएंगे।

फिर एक दिन अचानक से हमारी क्लास के ह्वाट्सएप ग्रुप में एक पी डी एफ फाइल आई। मैंने फाइल खोलकर देखी। देखकर मेरी आंखें फटी की फटी रह गईं। उस पी डी एफ में हमारे पेपर की डेट शीट दी हुईं थीं कि हमारे पेपर 28 मार्च से शुरु होकर 16 अप्रैल तक खत्म भी हो जाने वाले थे।

मैं देखकर बहुत डर गई थी क्योंकि, हमें पहले से ही डराया जाता है कि बोर्ड का पेपर बहुत ही मुश्किल आता है। लेकिन यह जानकर खुशी हुई कि कोरोना महामारी के चलते, उत्तराखंड सरकार द्वारा हमारा तीस प्रतिशत सेलेबल कम कर दिया गया है। मेरे लगभग सभी सब्जेक्ट ठीक ही थे, सांइस और मैथ्स को छोड़कर। साइंस फिर भी ठीक है पर मैथ्स तो एक दम खराब है।

फिर हमारी मैथ्स की एक्स्ट्रा क्लासेज शुरू हुईं, जिससे काफी सुधार आया। पेपर के एक महीने पहले हमारी नाईट क्लासेज शुरू की गईं, जो हमारे पेपरों के लिए बहुत फायदेमंद रही। हमें नाईट क्लासेज में पहले पढ़ाए गए चैप्टर्स को रिवाइज करवाया गया।

देखते ही देखते हमारी परीक्षा के दिन बहुत ही नजदीक आ गए। हमारी पूरी तैयारी हो चुकी थी। फिर वो दिन आया जिसका मुझे इंतजार था, यानी कि 28 मार्च। इस दिन हमारा पहला पेपर हिंदी का था। मैं बहुत ही उत्सुक थी, साथ ही साथ मुझे घबराहट सी महसूस हो रही थी। शायद इसीलिए कि मैं पहली बार कहीं बाहर जाकर पेपर देने वाली थी, वो भी अनजान बच्चों के साथ, अनजान स्कूल में।

पर पहले पेपर के दिन थोड़ी सी घबराहट हुई। फिर दूसरे पेपर से सब कुछ नॉर्मल हो गया था। लास्ट पेपर तक तो इतना नॉर्मल हो गया जैसे पेपर अपने ही स्कूल में दे रहे हैं। अब मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। सिर से जैसे बोझ उतर गया। बस अब रिजल्ट का बेसब्री से इंतजार है।

नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखंड

धरती माता

जीवन हमको देती है
हमसे कुछ न लेती है,
इससे गहरा नाता है
धरती सबकी माता है।

भोजन, पानी, हवा, दवा,
सब इसके वरदान हैं,
फिर भी इसको गंदा करते,
हम कैसे इंसान हैं।

सबसे मेरी विनती है
प्रदूषण अब मत फैलाओ,
पेड़-पौधे खूब लगाकर,
हरा-भरा इसे बनाओ।

नाम : प्रखर बहुगुणा
उम्र : 12,
कक्षा : 8,
स्कूल :टच वुड स्कूल देहरादून, उत्तराखंड

नाना जी का जूता

नाना जी जब भी आते थे तो वह हर बार एक ही जूता पहनकर आते थे और हमें उनके आने की सूचना दरवाजे पर जूता देखते ही मिल जाती थी। हमारे पास तो बहुत सारे जूते-चप्पल थे लेकिन नाना जी हमेशा एक ही पहनकर आते

हमें यह अच्छा नहीं लगता था। इसलिए हमने नाना जी के ही दिए पैसों से उनके लिए जूता खरीद लिया और नाना जी के आने पे उन्हें उपहार दे दिया।

मगर नाना जी खुश होने के बदले रोने लगे, जो हमें आज तक समझ में नहीं आया!

-सौमिका श्रीवास्तव

नाम : सौमिका श्रीवास्तव
उम्र : 13, कक्षा : 8,
स्कूल : एसएचके इंटर, कॉलेज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

अनन्या बलूनी

नाम : अनन्या बलूनी
उम्र : 10, कक्षा : 4,
जीआईसी इंटर कॉलेज, आईडीपीएल, विराभरा, ऋषिकेश, उत्तराखंड

लोग...

लोग सुनते है, लोग बोलते है,
लोग पीठ पीछे बोलते है।
लोग तरह-तरह की बातें बनाते हैं।
अपनी ही नजरों में ये लोग ,
दूसरों को कुछ इस तरह गिरा देते हैं,
कि चाहकर भी वे अपनी नजरें नहीं मिला पाते हैं।
इन्हीं लोगो में हममें से भी बहुत लोग आते हैं।
कुछ लोग नहीं, शायद हम सभी आते हैं।
किसी दूसरे के बारे में कुछ कड़वी बातें बोलकर,
हम अपने दिल को सुकून तो दे देते हैं।
पर चाहे कोई इंसान कितना भी अच्छा हो ,
लेकिन उसमे कमियां निकाल, उसका सुकून छीन लेते हैं।

नाम : दिव्या परगाई
उम्र : 15, कक्षा : 10,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

पिंजरा

नाम :गुरप्रीत कौर
उम्र : 14, कक्षा : 10,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

तस्वीर अभी धुंधली है
वो पिंजरे में बंद है ,
साफ दिखाई दे नहीं रही
रोशनी मंद-मंद है।

पिंजरे से बाहर आना चाहती है
पर तड़प अभी कम है,
वो खुलकर जीना चाहती है
इसलिए आंखें अभी नम है ।

रात हुई, आसमान तांकने लगी
और तारे गिनना शुरू किया,
एक तारा टूटा तो उम्मीद जगी
उसने अपना सपना मांग लिया।

पिंजरे से बाहर तो आ गई है
अब तसवीर थोड़ी सी साफ है,
फिर भी काफी धुंधलापन है
क्योंकि पिंजरा अभी भी पास है।

करेगी छोटी सी गलती
तो पिंजरा उसे दबोच लेगा,
अपने अंदर बंद करके
उसे दोबारा चलने का मौका नहीं देगा।

जीत

नाम : काजल धारीवाल
उम्र : 14, कक्षा : 10,
स्कूल :शा. पदमा कन्या राजे उच्च माध्यमिक विद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेश

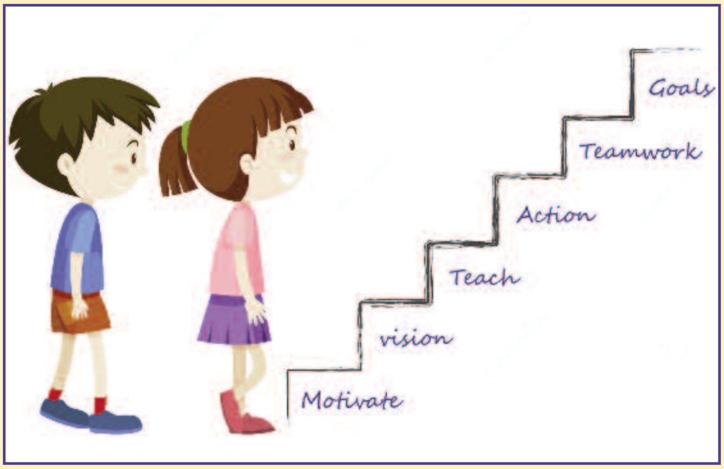

तो क्या हुआ शुरुआत थोड़ी कठिन है
आगे तो तरक्की ही तरक्की है
तू आगे बढ़कर तो देख तेरी जीत पक्की है।
तो क्या हुआ रास्ते थोड़े लम्बे है
मंजिल तो तुझे हर हाल में पाना है
तू आगे बढ़ते जा
तुझे अपना सपना पूरा कर दिखाना है
तुझे कामियाबी जरूर मिलेगी
अगर तेरी भावना सच्ची है
तू आगे बढ़के तो देख तेरी जीत पक्की है।
तो क्या हुआ किसी ने सहारा ना दिया
तू खुद का सहारा बन
जो पर ना कर सके कोई लहर
ऐसा मजबूत किनारा बन
तो क्या हुआ फिसल गया
सडक थोड़ी कच्ची है
तू अपने इरादे पक्के कर तेरी जीत पक्की है
तो क्या हुआ शुरुआत थोड़ी कठिन है
आगे तो तरक्की ही तरक्की है
तू आगे बढ़के तो देख तेरी जीत पक्की है।

नाम : प्रीत कौर
उम्र : 13, कक्षा : 7,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

अनुरोध

जिन बच्चों की रचनाएं नहीं लग पाईं, उनसे व उनके माता-पिता से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाओं को दोबारा भेज दें। रचनाएं भेजने के लिए ई-मेल का प्रयोग करने पर जल्दी छपने की संभावना रहती है क्योंकि ह्वाट्सअप पर इतने मैसेज आते हैं कि पहले के मैसेज दब जाते हैं। अपना नाम, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व शहर, राज्य व अपना पता के साथ अपनी अच्छी क्लोज अप फोटो तथा मोबाइल नंबर अवश्य भेजें ताकि आपको पत्रिका भेजी जा सके।

जून अंक में पशु-पक्षी पर आधारित रचनाओं को प्रथमिकता दी जाएगी।

ईल्ली और नानी (उपन्यास)

एक दुर्घटना

पिछले अंक में आपने पढ़ा :

एक नन्ही मक्खी ईल्ली की मां कीटाणुओं की व्यापारिन थी। एक बार मां के न रहने पर व्यापार करने इल्ली अपनी नानी के पास गई। नानी उसे देखकर खूब खुश हुईं। वह ईल्ली को व्यापार के गुण सिखाने लगीं। नानी उसे वहां-वहां ले गई, जहां व्यापार की खूब संभावना थी। ईल्ली को खूब मजा आया। ईल्ली को आज मच्छर जाति के बारे में रोचक बातें जानने को मिलीं। एक सुबह नानी ने ईल्ली को उठाया और कहने लगीं, "देखो ईल्ली,मैंने आज का दिन अंडे देने के लिए चुना है। नानी ने अंडे दिए, पर एक मेढक उनके पीछे पड़ गया। सब जान बचाकर भागे। फिर उनकी मुलाकात टिड्डों के सेनानायक खिता से हुई। उसकी ईल्ली से दोस्ती सी हो गई।

अब आगे...

ईल्ली और नानी बगीचे की ओर जा रही थी। रास्ते में ईल्ली की ट्रक खराब हो गई। नानी आगे निकल चुकी थी, इसलिए ईल्ली अकेली रह गई। रास्ता सुनसान था। उसने ट्रक को ठीक करने की काफी कोशिश की, किंतु ट्रक चालू नहीं हुआ।

अंधेरा छाने लगा था। ईल्ली इधर-उधर जगह तलाशने लगी। चिंता में डूबी ईल्ली चक्कर काट रही थी कि एक वाहन से टकरा गई और बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी।

इत्तफाक से खिता टिड्डे ने ईल्ली को टकराकर, गिरते हुए देख लिया था। वह बेहोश ईल्ली को अपने तंबू में ले आया।

टिड्डा दल के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने ईल्ली का इलाज शुरू कर दिया। उसके पंखों पर सबसे अधिक चोटें आई थीं। डॉक्टरों ने पंखों पर मलहम लगाकर पट्टियां बांध दीं।

कुछ देर बाद ईल्ली को होश आया। वह कराही, "मैं कहां हूं?"

"सेनानायक खिता को सूचित किया जाए। इस मक्खी को होश आ रहा है।" डॉक्टर टिड्डे ने नर्स टिड्डी को आदेश दिया और पुनः उपचार में जुट गया।

ईल्ली को होश आ चुका था। उसने अपने आपको टिड्डी डॉक्टरों से घिरा पाया, जो उसके पांवों पर पट्टियां बांध रहे थे। उसके अंग-प्रत्यंग में दर्द हो रहा था। उसने देखा, "यह तो ऑपरेशन कक्ष है। वह यहां कैसे आ गई? उसके बदन में दर्द क्यों है? और उसके पंख...।"

तभी सामने सेनानायक खिता को आता देख वह चौंकी, "खिता तुम?"

"हां ईल्ली मैं। तुम्हारा एक्सीडेंट हो गया था और तुम बेहोश होकर गिर पड़ी थी। मैं ही तुम्हें यहां उठा लाया।"

खिता के कहने के साथ ही ईल्ली को सब याद आने लगा कि कैसे बीच रास्ते उसकी ट्रक खराब हो गई और वह नानी से बिछुड़ गई-

"ओह! नानी मुझे न पाकर परेशान होंगी।" ईल्ली को चिंता हुई।

"मैंने तुम्हारी नानी के पास सूचना भिजवा दी है। सुबह तक वह आ जाएंगी।" खिता ने आगे कहा, "तुम आराम करो ईल्ली। तुम्हारे पंखों पर सबसे अधिक चोट लगी है। किंतु तुम धीरज रखो। हमारे कुशल चिकित्सक पंखों का ईलाज करने में बहुत होशियार है। तुम जल्दी ही ठीक होकर उड़ान भरने लगोगी।"

"और मेरी सुरीली आवाज?" ईल्ली को आशंका हुई कि कहीं चोट के कारण उड़ते समय पंखों से भिनभिनाहट की आवाज न हुई तो।?

"यह ठीक होने पर ही मालूम होगा ईल्ली कि तुम्हारे पंख पहले जैसी सुरीली आवाज में कंपन कर पाते है या नहीं। वैसे हम पूरी कोशिश में जुटे है कि तुम्हारा मधुर स्वर बना रहे।" एक टिड्डा डॉक्टर ने ईल्ली को सांत्वना देते हुए कहा।

"ओह! धन्यवाद डॉक्टर।" ईल्ली ने डॉक्टर से कहा फिर वह खिता से बोली, "मैं तुम्हारी भी आभारी हूं। सचमुच तुम दयालु और नेक हो।"

टिड्डे डॉक्टरों और नर्स के सामने एक सुंदर मक्खी से अपनी प्रशंसा सुन खिता फूला नहीं समाया। खुश हो वह गीत गुनगुनाने लगा।

कल होगी एक सुंदर सुबह
ताजी बहेगी हवाएं
उड़न झूलों पर
हवा बैठकर आएगी
एक सलोनी मक्खी को
संग अपने उड़ा ले जाएगी
उसकी पोशाक का
लाल पीला रंग
दूर आसमान में
पतंग बन
लहर लहर लहराएगा।
कल होगी एक सुंदर सुबह
इंद्रधनुष पुल बनाएगा
सतरंगे रंग आसमान में
छितराएगा।
एक सलोनी मक्खी को
संग अपने उठा ले जाएगा
इन्द्रधनुष पर बैठी
ईल्ली रानी
को देख हर कोई ललचाएगा
कल होगी एक सुंदर सुबह
मधुरम, सुनहरी किरणें
अपने रथ में बिठाएगी
दूर गगन में
हीरे जैसी ईल्ली चमचमाएगी।
कल होगी एक सुंदर सुबह
ईल्ली रानी
पंख फैला उड़ जाएगी।

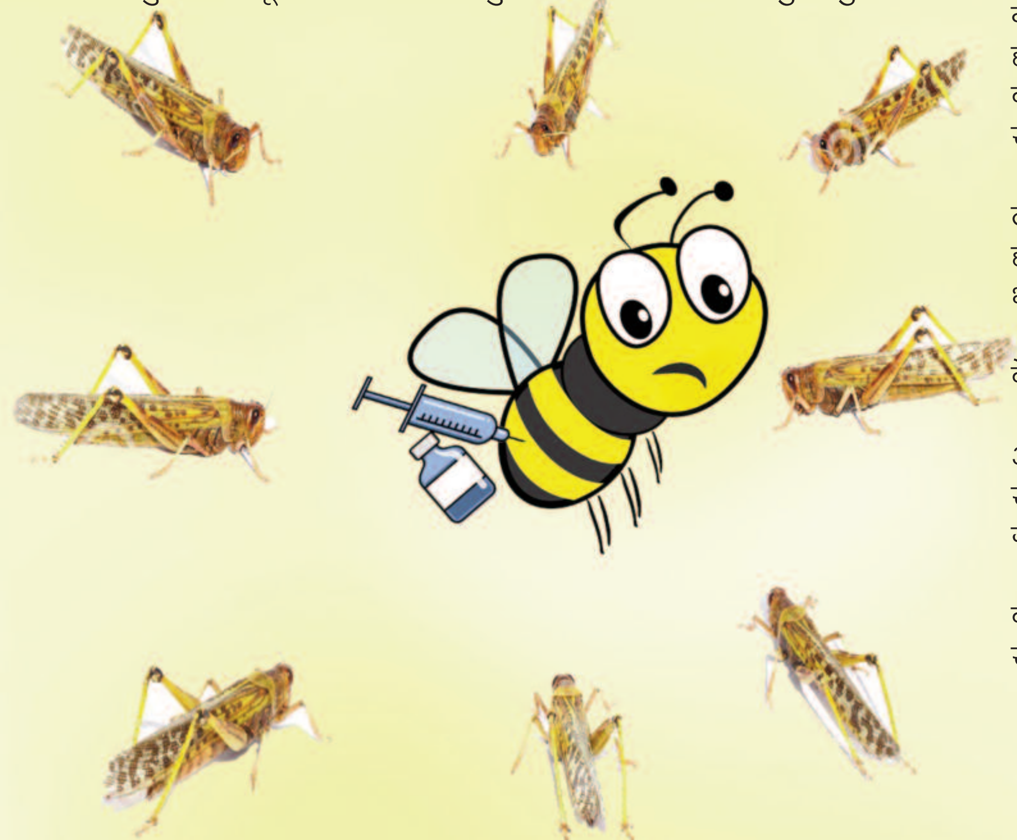

खिता के मधुर गीत से ईल्ली का दर्द कम होने लगा था। खिता ने मन भरकर गीत गाया। वह इससे बढ़कर भला ईल्ली की और क्या मदद कर सकता था, दर्द ही तो बांट सकता था। हुआ भी यही, ईल्ली अब काफी स्वस्थ महसूस कर रही थी।

"तुम्हें भूख लगी होगी ईल्ली परंतु हमारे यहां तो सिर्फ हरे पत्ते हीं है खाने के लिए...।" खिता बोला।

"नहीं खिता, मैं पत्तों का पर्णहरित नहीं खाती। क्या तुम नहीं जानते कि हम मक्खियों का भोजन अलग तरह का होता है और लेती भी अलग ढंग से है।"

"मुझे मालूम है ईल्ली तुम केवल तरल रूप में भोजन को चूस सकती हो। परंतु तुम्हारे लिए अंधेरे में भोजन लाना बहुत मुश्किल है।"

"ओह खिता! फिर तो मुझे भूख के मारे नींद नहीं आएगी।"

ईल्ली की बात सुन खिता को अफसोस हुआ। परंतु किया क्या जा सकता था। अब जैसे तैसे रात तो गुजारनी ही थी।

खिता रात गुजारने के लिए ईल्ली को अपनी यात्राओं के रोचक वर्णन सुनाने लगा।

अगले अंक में जारी...

रचनाकार को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। अपनी साहित्यिक गतिविधियों के लिए ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की वह संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

छुट्टियों में कुछ अलग करें

गरमी की छुट्टियां यानी मस्ती का समय। घूमना-फिरना, टीवी देखना, दोस्तों के साथ खेलना। परंतु इन्हें अगर तरीके से करोगे, तो यह तुम्हारे लिए मजे का समय भी होगा और साथ ही तुम्हारा विकास भी होगा।

कैसे समय को बांटें :

आजकल गरमी है। धूप निकल आने पर ना खेलना आसान है और ना साइकिल चलाना। इसलिए समय से उठकर जॉगिंग के लिए जाने का तुम्हारे पास यही समय है। अगर सुबह उठकर दौड़ने नहीं जा पाए, तो कोई बात नहीं, अपने दोस्तों के साथ साइकिल चलाने का मजा लो। पर सुबह के समय को गंवाओ मत। पूरी छुट्टियों में अगर तुमने जॉगिंग कर ली या साइकिल चला ली, तो तुम खुद को फिट महसूस करोगे।

किताबें पढ़ो :

नाश्ता करके जब तुम फ्री हो जाओ, तो स्कूल की किताबें निकालो। उनको वैसे ही मजे लेकर पढ़ो, जैसे हैरी पॉटर जैसी किताब को पढ़ते हो। इन छुट्टियों में अगर किताबों को पढ़ लोगे, तो देखना, स्कूल खुलने के बाद खुद को औरों से आगे पाओगे।

घर में मम्मी की मदद करो :

यह समय है कि तुम मम्मी की मदद करो। और कुछ ना करो, बस अपना कमरा ठीक रखो, अपना सामान घर में मत बिखराओ। अपनी कॉपी-किताबें संभालकर रखो। वह जो खिलाएं, प्यार से खा लो। उन्हें किसी बात की टेंशन मत दो।

बड़ों से मदद लो, छोटों को मदद दो :

अगर घर में तुमसे बड़े भाई-बहन हैं, तो उनसे तुम खुद के विकास के लिए मदद ले सकते हो। उनसे पूछो कि वे कैसे अपनी पढ़ाई को मैनेज करते थे। अगर तुम्हारा कोई छोटा भाई है या छोटी बहन है, तो उनकी मदद करो। उन्हें अपने साथ बैठाकर पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हो।

शौक विकसित करो

खाली समय का सबसे अच्छा उपयोग होता है हॉबी में। तुम अपने मन के हिसाब से कोई शौक चुनकर उसमें आगे बढ़ सकते हो। डांस या सिंगिंग सीख सकते हो। और कुछ नहीं, तो चित्रकारी में हाथ आजमा सकते हो। किसी समर कैंप का हिस्सा बन सकते हो। ●

शर्त
कल्पना और चित्र
पंकज राय
मैं तुमसे हजार रुपए की शर्त लगाता हूं
मैं तुमसे दस हजार की शर्त लगाता हूं
मैं तुमसे दस लाख की शर्त लगाता हूं
मैं तुमसे बीस लाख की शर्त लगाता हूं
मैं तुमसे पचास करोड़ की शर्त लगाता हूं
मैं तुमसे सौ करोड़ की शर्त लगाता हूं
देखो पैगी और क्विकी, मुझे पांच रुपए का सिक्का सड़क पर मिला
वाह, तुम बड़े भाग्यशाली निकले। काश हम भी इतने भाग्यशाली होते कि हमें ऐसे गिरे हुए पैसे मिल जाते

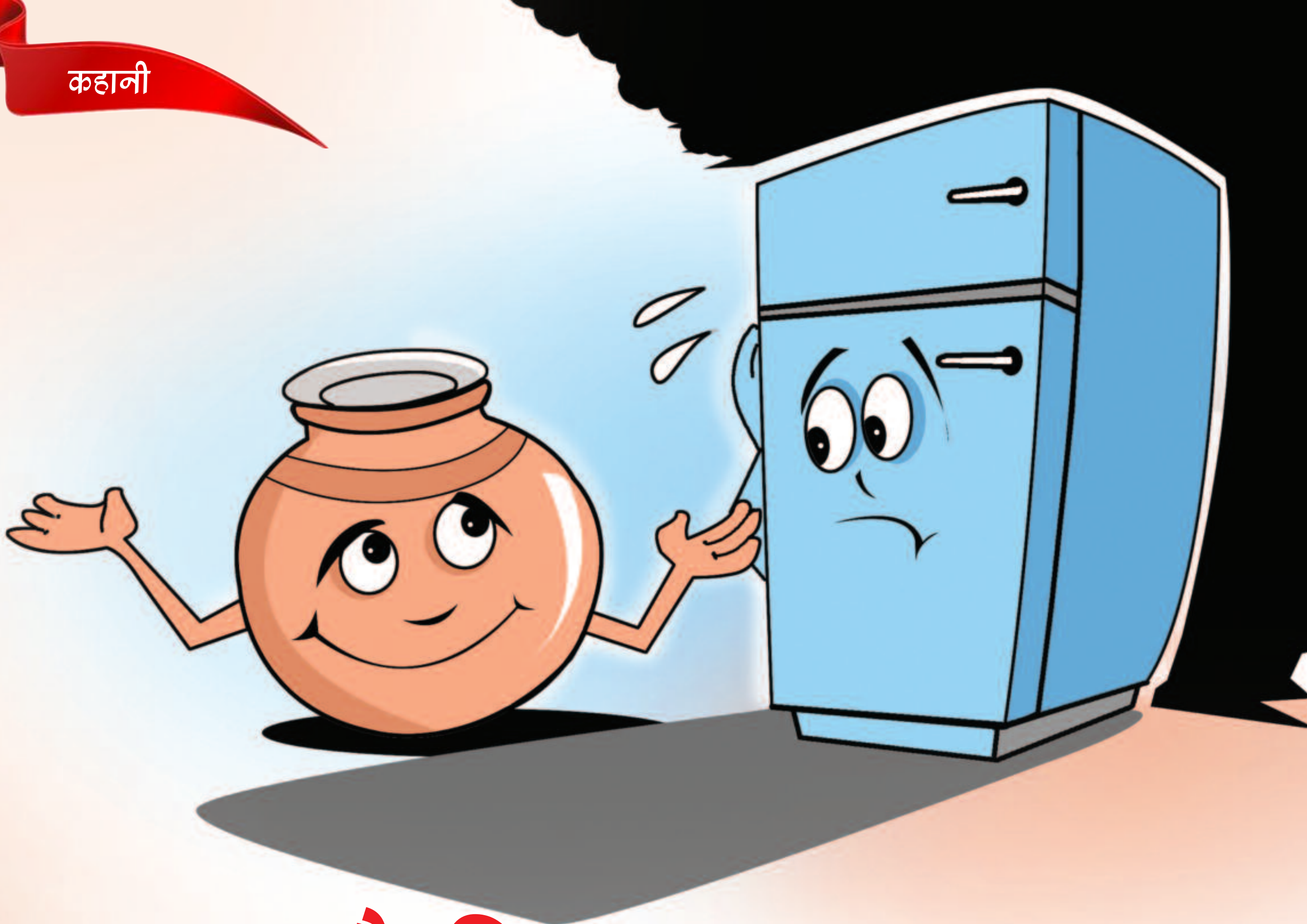

नया नौ दिन पुराना सौ दिन

गरमी का मौसम शुरू हो चुका था। घर में नया फ्रिज आया, तो परिवार के सब सदस्य खुशी से झूमने लगे। लेकिन फ्रिज के समीप ही पड़ा मटका कुछ उदास हो गया। आज तक घर में उसकी जो कद्र थी वह घटती नजर आ रही थी।

जब से फ्रिज आया था, परिवार के सब लोग उसी के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहते थे। कोई ठंडा पानी पीने लगता, तो कोई जम रही आइसक्रीम को बार-बार निहारता रहता। बच्चे स्कूल से आते ही कंधों से बस्ते उतारकर फ्रिज की ओर भागते। फिर ठंडे पानी की बोतलें गट-गट कर पी जाते और फ्रिज की प्रशंसा करते कहते, "वाह, मजा आ गया। कलेजे में ठंडक पड़ गई।"

एक कोने में पड़े पुराने मटके को जैसे सब भूल चुके थे। अब तो कोई उसे साफ भी नहीं करता था। मटका अपनी बेकद्री देख दुखी हो जाता।

एक दिन फ्रिज को मटके पर हंसी आई और उसने घमंड में मटके से कहा, "लगता है, अब तुम्हारी यहां कोई जरूरत नहीं। अरे भाई, यह नया जमाना है, मशीनी युग। हर चीज बिजली से चलती है। मेरे में वह सब गुण हैं जो मनुष्य को चाहिए। तभी तो मेरी चंद दिनों में ही कद्र होने लगी। एक तुम हो, जिसका वर्षों से इस घर से नाता होते हुए भी कोई कद्र नहीं रही।" मटका खामोश होकर फ्रिज की व्यंग्य भरी बातें सुनता रह गया।

एक दिन गांव में बिजली चली गई। पता लगा कि तकनीकी खराबी होने की वजह से पूरे पांच दिन बिजली नहीं आने वाली। भीषण गरमी के दिन थे। ऐसी अवस्था में हर किसी को प्यास लगना स्वाभाविक बात थी। फ्रिज के पानी

की आदत पड़ने पर अब हर कोई ठंडे पानी को तरस रहा था।

तभी दादा जी ने कहा, " इससे तो अच्छा अपना यह पुराना मटका है। हम लोग तो फ्रिज के आने के बाद इसे भूल ही गए थे। कितने वर्षों तक इसने हमें ठंडा पानी पिलाया। चलो, इसे साफ करते हैं और पानी से भरते हैं। फिर सारा दिन इसका ताजा व ठंडा पानी पीने को मिलेगा।"

फिर घर सब लोग मिलकर जमी काई को साफ करने लगे। बच्चे नल से पानी भर लाए और साफ मटके में भरने लगे। शाम को काम से थके-हारे लोग घर लौटे, तो सबसे पहले मटके की तरफ बढ़े और जी भर कर ठंडा व ताजा पानी पीया।

अब बच्चे भी जब भरी दोपहरी में स्कूल से घर आते, तो सर्वप्रथम मटके के इर्द गिर्द हो जाते और अपनी प्यास बुझाते हुए कहते, "वाह, इसका पानी कितना स्वाद है और ताजा है।"

बच्चों की बातें सुनकर दादा जी बोले, "बच्चो, इसीलिए तो कहते हैं कि नया नौ दिन पुराना सौ दिन। देसी चीजें कभी धोखा नहीं देतीं। तुम्हें मटके की और कई खूबियां बताता हूं।"

बच्चे अपने दादा जी के पास बैठ गए और बातें सुनने लगे।

"मटके का पानी सेहत के लिए गुणकारी है। इसके पीते रहने से इम्यूनिटी स्ट्रांग होती है। पहले जब फ्रिज नहीं था, तो लोग मटके का पानी ही पीते थे। बल्कि आज भी फ्रिज होने पर बहुत से लोग अच्छे स्वास्थ्य के लिए मटके का पानी ही पीते हैं। मटके की दीवारों पर बहुत सारे छोटे-छोटे छेद होते हैं और इन छेदों से हमेशा पानी रिसता रहता है। इसी वजह से मटके की सतह पर हमेशा गीलापन बना रहता है। जिससे पानी ठंडा व ताजा रहता है। इसीलिए पुराने लोग मटके के पानी का महत्त्व जानते हैं। यह स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, पर्यावरण के लिए भी अच्छा होता है। फ्रिज का पानी अच्छा तो लगता है, मगर यह कई बीमारियों को न्योता देता है। जैसे हड्डियों को कमजोर करता है व गला खराब करता है।"

"हां दादा जी, फ्रिज का पानी पीने से कितने दिन मेरा गला खराब रहा। अच्छे से खाना भी न खाया गया। कड़वी दवा लेनी पड़ी सो अलग।" एक बच्चे ने झट से कहा तो दूसरा बोला, "मेरे अध्यापक जी भी आज समझा रहे थे कि मटके का पानी स्वास्थ्य के लिए गुणकारी है। हमें फ्रिज के पानी का कम ही सेवन करना चाहिए।"

"दादा जी, आपको तो बहुत जानकारी है?" एक बच्चे ने दादा जी से सवाल किया तो वह बोले, "मैं हमेशा अच्छी पुस्तकें पढ़ता हूं। उसी में से मुझे ज्ञान मिलता है। तुम लोग भी गांव में खुल चुकी नई लाइब्रेरी में जाकर अच्छी पुस्तकों का चुनाव कर पढ़ा करो।"

परिवार वालों की बातें सुन कर आज फ्रिज का सिर शर्म से झुक गया था।

उसने मटके से क्षमा मांगी, तो अपने स्वभाव की तरह शीतल मटके ने उसे हंसकर क्षमा कर दिया। ●

अपने लेखक को जानिए

हरिन्दर सिंह गोगना : पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) में कार्यरत। सात सौ से अधिक बाल कविताएं, बाल कहानियां, लेख, लघुकथाएं विभिन्न पत्रिकाओं व अखबारों में प्रकाशित। नंदन, चंपक, बालहंस, नन्हे सम्राट, व जनसत्ता, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, पंजबा केसरी, दैनिक ट्रिब्यून आदि प्रतिष्ठित अखबारों में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं, आर्थिक योगदान देकर भी इस प्रयास में सहयोगी बनें

दीवार पत्रिका

कृति अटवाल, कक्षा-12, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

करीब तीन साल पहले 2019 में पिथौरागढ़ के शिक्षक साहित्यकार महेश पुनेठा जी ने दीवार पत्रिका की पहल की थी। हम बच्चे तो बस इतना जानते थे कि यह बच्चों की रचनात्मकता और मौलिकता को स्पेस देने का एक प्लेटफॉर्म है।

परीक्षाएं खत्म हुईं, तो हमारे शिक्षकों ने हमें दीवार पत्रिका लिए उत्साहित करना शुरू कर दिया। दीपावली की छुट्टियां नजदीक थीं, तो हमारे टास्क में दीवार पत्रिका भी जुड़ गई। संपादक मंडल भी बना।

विद्यालय की पहली दीवार पत्रिका का संपादन कार्य सिर्फ नौंवी और दसवीं कक्षा के ही बच्चों को सौंपा गया। संपादक के लिए इतने साथी जुट गए कि हमें दो संपादक मडलियां बनानी पड़ीं।

संपादक वो थे, जिन्होंने लेखन की दुनिया में अभी पेंसिल तक नहीं उठाई थी। इसलिए हमारा यह पहला प्रयास बड़ा ही कठिन साबित हुआ। लिखने आर्टिकल बैठे थे और लिख दिया निबंध।

इसलिए हमें लिखने के लिए विषय चुनने और आइडिया देने में शिक्षकों ने मदद की। उन्होंने हमें यह बताया कि क्या-क्या कर सकते हैं।

जैसे-तैसे लेखन का काम खत्म हुआ। अब सभी आर्टिकल्स को देखने की बारी आई। हमें खुद ही इसकी एडिटिंग भी करनी थी। यह सबकर जब हमें लगा कि आखिरकार हमारा काम खत्म हुआ तो पता लगा कि हमें संपादकीय भी लिखनी है।

लिखने तक तो ठीक था, पर संपादकीय। हमें बताया गया कि संपादकीय में हम पत्रिका को निकालने के पीछे के विचार लिख सकते हैं। करीब 14-15 दिमाग ने मिलकर संपादकीय लिखा।

अब बारी आई, उन कागजों को एक कार्डबोर्ड पर लगाने की, जो हमने करीब एक महीने की मेहनत को संजोए थे। इस काम से एक और काम निकला। अपनी बेनाम पत्रिका का नामकरण करने का। सभी 'द एक्सप्लोरर-द वॉइस ऑफ लर्नर्स' पर रजामंद हुए। फिर तैयारियां शुरू हुईं दरवाजे के आकार के एक कार्डबोर्ड को सजाने की ताकि उस पर हम रचनाओं को लगा सकें।

पत्रिका तैयार हुई। पूरी संपादक मंडली के लिए वे दो बोर्ड जिंदगी के सबसे सुंदर बोर्ड थे, जो अब दीवार पत्रिका बन चुके थे। संपादक मंडल इस पर अडिग था कि आलोचनाओं और सुझाव का हम दिल खोलकर स्वागत करेंगे। इसलिए हमने गत्ते के एक पुराने बॉक्स को फीडबैक बॉक्स में तब्दील कर पत्रिका के बगल में रख दिया। अब हमारी इस पहली दीवार पत्रिका, 'द एक्सप्लोरर-द वॉइस ऑफ लर्नर्स' को कोई भी साथी पढ़ सकता था और सुझाव भी दे सकता था।

हमने एक उद्घाटन समारोह भी आयोजित किया। इसमें संपादक मंडल ने स्कूल के सभी बच्चों और मेहमानों के सामने अपने विचार व्यक्त किए। दीवार पत्रिका मुहीम के बारे में भी बताया गया।

इस प्रक्रिया ने हमें अपने विचार अभिव्यक्त करना सिखाया। हमें स्कूल ने तो सराहा ही, साथ ही फेसबुक के ही जरिए हमें जान रहे लोगों ने प्रोत्साहित भी किया।

धीरे-धीरे पत्रिका में लिखने के लिए इतने साथी उत्साहित हुए कि स्कूल की एक दीवार पत्रिका अब हर एक कक्षा की अलग-अलग दीवार पत्रिका बन गई।

इससे हमारे दिमाग में यह विचार आया कि दीवार पत्रिका तो सिर्फ स्कूल तक ही सीमित है। क्यों ना अपने काम और इस पहल को औरों तक भी पहुंचाया जाए।

और यहां से निकला नानकमत्ता पब्लिक स्कूल के अपने अखबार 'द एक्सप्लोरर' का विचार।

एन.पी.एस के इस अखबार रूपी दीवार पत्रिका के लिए कागजों पर लिखे शब्दों को टाइप करना हमने शुरू कर दिया। दीवार पत्रिका में प्रूफ की काफी गलतियां रह गई थीं। इसलिए प्रूफ के काम में हमने अपने पाठकों से ही मदद ली। बच्चे पढ़ने के साथ-साथ गलतियां भी रेखांकित कर देते थे। जिससे हमें अपने टेक्स्ट में हुई गलतियों को ठीक करने का मौका मिला।

बुलेटिन में संपादक मंडल की भूमिका बस इतनी ही थी। संपादक मंडल की तरफ से प्रूफ रीडिंग पूरी होने के बाद शिक्षकों ने प्रूफ रीडिंग की और फिर अखबार छपने के लिए प्रिंटिंग प्रेस में भेज दिया गया। पर क्योंकि अलग-अलग फोंट में टेक्स्ट लिखा गया था, तो पेज डिजाइन होने में ही कई सारे बदलाव हो गए। अब प्रूफ का काम दोबारा बढ़ गया। फिर से संपादक और शिक्षक काम में जुट गए। और आखिरकार कुछ और मेहनत करने के बाद हमारा पहला प्रिंटेड अखबार भी तैयार हुआ।

पिथौरागढ़ के शिक्षक साहित्यकार महेश पुनेठा

अखबार की प्रतियां सभी बच्चों में बांटी गई। दुकानदारों को दी गई। संपादकों द्वारा यह प्रतियां बैंक और अन्य स्कूलों तक भी पहुंचाई गईं। हमने अपने अखबार को लगभग हर मुमकिन जगह पहुंचाने की कोशिश की। आर्थिक तौर पर भी हमने स्थिर होने की कोशिश की। स्कूल के सभी बच्चों और शिक्षकों से कुछ आर्थिक योगदान देने का आग्रह किया। इसमें हम कुछ हद तक सफल भी हुए।

विद्यालय में होने वाली अभिभावक-शिक्षक गोष्ठी में भी हमारी संपादक मंडली के सदस्य स्कूल गेट पर तैनात रहा करते थे। ताकि अभिभावकों को भी इस पहल के बारे में पता चल सके और वे भी इसमें अलग-अलग रूप में हिस्सा ले सकें।

कोविड की मार में हमारी संपादक मंडली ने भी इससे लड़ने के लिए खुद को डिजिटल कर लिया। कोविड के समय में भी हमने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर पत्रिका निकाली। पीडीएफ निकाले। वीडियो मैगजीन यूट्यूब पर निकाली। और फिर कोविड के बाद दीवार पत्रिका और अखबार पहले की ही तरह दोबारा स्कूल से निकलने लगे। ●

अजब जानवर साही

साही दक्षिणी एशिया और मध्य पूर्व की मूल निवासी है। साही को विलुप्त होने में कम चिंता वाले जानवरों की सूची में रखा गया है। यह पुरानी दुनिया के साही परिवार, हिस्ट्रिसिडे से संबंधित है।

भारतीय कलगीदार साही एक बड़ा कांटेदार जानवर है, जिसका वजन 11से 18 किलोग्राम तक होता है। उनका शरीर नाक से पूंछ के आधार तक 28 और 35 इंच के बीच होता है।

इसका शरीर बालों की कई परतों में ढका हुआ होता है, जिन्हें क्विल्स कहा जाता है, जिसमें लंबे, पतले क्विल्स छोटे, मोटे बालों की एक परत को कवर करते हैं। बारी-बारी से सफेद और काले बैंड के साथ क्विल भूरे या काले रंग के होते हैं। वे केराटिन से बने होते हैं और अपेक्षाकृत लचीले होते हैं। प्रत्येक क्विल अपने आधार पर एक मांसपेशी से जुड़ा होता है, जिससे साही को खतरा महसूस होने पर अपनी क्विल को ऊपर उठाने की अनुमति मिलती है। सबसे लंबी क्विल्स गर्दन और कंधे पर स्थित होती हैं, जहां क्विल्स जानवर के चारों ओर एक 'स्कर्ट' बनाती हैं। ये क्विल 20 इंच तक लंबे हो सकते हैं, संभावित खतरों पर छुरा की तरह घोंपने के लिए इन छोटे क्विल का उपयोग किया जाता है। लंबी, खोखली कीलों के साथ साही खतरे की स्थिति में चेतावनी ध्वनि उत्पन्न करने के लिए खड़खड़ कर सकता है। आम धारणा के विपरीत, साही अपने क्विल को शूट कर आक्रमण नहीं कर सकते हैं।

साही के पैर चौड़े होते हैं और लंबे पंजों को बिना आवाज चलने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। साही में गंध और तेज की बहुत अच्छी समझ होती है।

अफगानिस्तान, आर्मेनिया, अजरबैजान, चीन, जॉर्जिया, भारत, ईरान, इराक, इज़राइल, जॉर्डन, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, लेबनान, नेपाल, पाकिस्तान, सऊदी अरब, श्रीलंका सहित पूरे दक्षिण-पश्चिम और मध्य एशिया में साही पाए जाते हैं। पर्यावरण के हिसाब से अपने को ढालने में सक्षम होने के कारण

कारण साही कहीं भी रह लेते हैं। वे चट्टानी पहाड़ियों को पसंद करते हैं, लेकिन उष्णकटिबंधीय और झाड़ियों, घास के मैदानों, जंगलों, वृक्षारोपण और बगीचों में भी मिल जाते हैं।

साही अपनी आहार संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए अधिकतर शाकाहारी होते हैं। वे विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक और कृषि पौधों की सामग्री का उपभोग करते हैं, जिसमें जड़ें, फल, अनाज और कंद शामिल हैं, साथ ही कीड़े भी खा लेते हैं।

वे निम्न गुणवत्ता वाले चारे का पचाने में सक्षम हैं। वे कैल्शियम जैसे खनिजों को प्राप्त करने के लिए हड्डियों को चबाने के लिए भी जाने जाते हैं, जो कि क्विल के विकास में सहायता करते हैं। पयाप्त वसा भंडार बनाने की उनकी क्षमता मौसमी उतार-चढ़ाव वाले आवासों में रहने के लिए उपयोगी है।

साही निशाचर है। वयस्क और और किशोर दोनों ही हर रात औसतन 7 घंटे चारा खाने में बिताते हैं। वे रात को चांदनी में जाने से बचते हैं, जो कि शिकार से बचने की उनकी रणनीति हो सकती है।

साही में अपने मांद के करीब रहने की प्रवृत्ति होती है। दिन के दौरान, वे

अपनी मांद में रहते हैं, लेकिन पूरे सर्दियों में, वे कभी-कभी दिन के उजाले के दौरान अपनी मांद से धूप में निकलने के लिए निकलते हैं।

वे अच्छी तरह से चढ़ते या कूदते में सक्षम नहीं हैं। वे अपना अधिकांश जीवन जमीन पर या उसके नीचे बिताते हैं। हालांकि, वे अच्छे तैराक भी होते हैं।

साही के शिकारियों में बड़ी बिल्लियां, धारीदार लकड़बग्घा, भेड़िए, जंगली कुत्ते, खारे पानी के मगरमच्छ और मनुष्य शामिल हैं।

जब साही उत्तेजित या डरा हुआ होता है, तो खुद को बड़ा दिखाने के लिए अपनी कलमों को ऊपर खड़ा कर देता है। यह अपनी पूंछ के आधार पर खोखले क्विल्स को भी खड़खड़ कर आवाज कर सकता है, गुर्रा सकता है।

साही का गर्भकाल औसतन 240 दिनों तक रहता है। एक मादा प्रति वर्ष दो से चार संतानों को जन्म देती है। युवा खुली आंखों के साथ पैदा होते हैं और छोटी, मुलायम बालों से ढके होते हैं, जो जन्म के कुछ घंटों के भीतर सख्त हो जाते हैं।

जन्म के 13-19 सप्ताह बाद ये दूध छोड़ देते हैं, लेकिन 2 साल की उम्र के युवा होने तक माता-पिता और भाई-बहनों के साथ मांद में रहते हैं।

शहरीकरण, बुनियादी ढांचे के विकास और कीटनाशकों के उपयोग के परिणामस्वरूप, वर्तमान में साही के आवास में गिरावट आ रही है। भारतीय साही भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम तहत संरक्षित है। इसे बचाने की आवश्यकता है।

सांची

मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में सांची नगर के पास एक पहाड़ी पर स्थित एक छोटा सा गांव है सांची।

सांची बेतवा नदी के किनारे, भोपाल से 46 कि.मी. और विदिशा से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां कई बौद्ध स्मारक हैं जो तीसरी शताब्दी ई.पू. से बारहवीं शताब्दी के बीच के काल के हैं। सांची के पास ही एक अन्य विश्वप्रसिद्ध स्थल, भीमबेटका भी है।

सांची में छोटे-बड़े अनेकों स्तूप हैं, जिनमें स्तूप संख्या 2 सबसे बड़ा है। चारों ओर की हरियाली अद्भुत है। इस स्तूप को घेरे हुए कई तोरण भी बने हैं। स्तूप संख्या 1 के पास कई लघु स्तूप भी हैं, उन्हीं के समीप एक गुप्त कालीन पाषाण स्तंभ भी है। यह प्रेम, शांति, विश्वास और साहस के प्रतीक हैं।

सांची का महान मुख्य स्तूप मूलतः सम्राट अशोक महान ने तीसरी शती, ई. पू. में बनवाया था। बाद में इस सांची के स्तूप को सम्राट अग्निमित्र शुंग ने जीर्णोद्धार करके और बड़ा और विशाल बना दिया। पहले इसके केंद्र में एक अर्धगोलाकार ईंट निर्मित ढांचा था, जिसमें भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष रखे थे। इसके शिखर पर स्मारक को दिए गए ऊंचे सम्मान का प्रतीक रूपी एक छत्र था।

इस स्तूप में एक स्थान पर दूसरी शताब्दी ई.पू. में तोड़फोड़ की गई थी। यह घटना शुंग सम्राट पुष्यमित्र शुंग के उत्थान से जोड़कर देखी जाती है। यह माना जाता है कि पुष्यमित्र ने इस स्तूप का ध्वंस किया था और बाद में उसके पुत्र अग्निमित्र ने इसे पुनर्निर्मित करवाया होगा।

शुंग वंश के अंतिम वर्षों में स्तूप के मूल रूप का लगभग दुगुना विस्तार पाषाण शिलाओं से किया गया था। इसके गुम्बद को ऊपर से चपटा करके, इसके ऊपर तीन छतरियां, एक के ऊपर दूसरी करके बनवाई गई थीं। ये छतरियां एक वर्गाकार मुंडेर के भीतर बनी थीं। अपने कई मंजिलों सहित, इसके शिखर पर धर्म का प्रतीक, विधि का चक्र लगा था। यह गुम्बद एक ऊंचे गोलाकार ढोल रूपी निर्माण के ऊपर लगा था। इसके ऊपर एक दो-मंजिला जीने से पहुंचा जा सकता था। भूमि स्तर पर बना दूसरी पाषाण परिक्रमा, एक घेरे से घिरी थी। इसके बीच प्रधान दिशाओं की ओर कई तोरण बने थे।

द्वितीय और तृतीय स्तूप की इमारतें शुंग काल में निर्मित लगतीं हैं, परंतु वहां मिले शिलालेख के अनुसार ये शुंग काल के नहीं थे, इन्हें बाद के सातवाहन वंश द्वारा बनवाया गया था। इसके साथ ही भूमि स्तर की पाषाण परिक्रमा और महान स्तूप की पाषाण आधारशिला भी उसी काल का निर्माण हैं।

तोरण एवं परिक्रमा 70 ई.पू. के पश्चात् बने थे और सातवाहन वंश द्वारा निर्मित हैं। एक शिलालेख के अनुसार दक्षिण के तोरण की सर्वोच्च चौखट सातवाहन राजा सतकर्नी की ओर से उपहार स्वरूप मिली थी

स्तूप यद्यपि पत्थर से निर्मित हैं, किंतु काष्ठ की शैली में गढ़े हुए तोरण, वर्णात्मक शिल्पों से परिपूर्ण हैं। इनमें बुद्ध की जीवन की घटनाएं, दैनिक जीवन शैली से जोड़कर दिखाई गईं हैं। इस प्रकार देखने वालों को बुद्ध का जीवन और उनकी वाणी भली प्रकार से समझ में आता है।

सांची और अधिकांश अन्य स्तूपों को संवारने हेतु स्थानीय लोगों द्वारा भी दान दिए गए थे, जिससे उन लोगों को अध्यात्म की प्राप्ति हो सके। कोई सीधा राजसी आश्रय नहीं उपलब्ध था। दानकर्ता, चाहे स्त्री या पुरुष हों, बुद्ध के जीवन से संबंधित कोई भी घटना चुन लेते थे और अपना नाम वहां खुदवा देते थे। कई खास घटनाओं के दोहराने का, यही कारण था। इन पाषाण नक्काशियों में, बुद्ध को कभी भी मानव आकृति में नहीं दर्शाया गया है। बल्कि कारीगरों ने उन्हें कहीं घोड़ा, जिसपर वे अपने पिता के घर का त्याग कर के गये थे, तो कहीं उनके पादचिन्ह, कहीं बोधि वृक्ष के नीचे का चबूतरा, जहां उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी, के रूप में दर्शाया है। बुद्ध के लिए मानव शरीर अति तुच्छ माना गया था। सांची की दीवारों के बॉर्डरों पर बने चित्रों में यूनानी पहनावा भी दर्शनीय है। इसमें यूनानी वस्त्र, मुद्रा और वाद्य हैं जो कि स्तूप के अलंकरण रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

आगे की शताब्दियों में अन्य बौद्ध धर्म और हिन्दू निर्माण भी जोड़े गए। यह विस्तार बारहवीं शताब्दी तक चला। मंदिर संख्या 17 संभवतः प्राचीनतम बौद्ध मंदिर है, क्योंकि यह आरंभिक गुप्त काल का लगता है। इसमें एक चपटी छत के वर्गाकार गर्भगृह में द्वार मंडप और चार स्तंभ हैं। आगे का भाग और स्तंभ विशेष अलंकृत और नक्काशीदार है, जिनसे मंदिर को एक परंपरागत छवि मिलती है, किंतु अंदर से और शेष तीनों ओर से समतल है। भारत में बौद्ध धर्म के पतन के साथ ही, सांची का स्तूप उपेक्षित हो गया और इस खंडित अवस्था में आ गया।

एक ब्रिटिश अधिकारी जनरल टेलर पहले इतिहासकार थे, इन्होंने सन 1818 में, सांची के स्तूप का अस्तित्व दर्ज किया। अव्यवसायी पुरातत्ववेत्ताओं और खजाने के शिकारियों ने इस स्थल को खूब लूटा या बर्बाद किया, जब तक कि सन 1818 में इसका उचित जीर्णोद्धार कार्य नहीं आरम्भ हुआ। 1912 से 1919 के बीच, ढांचे को वर्तमान स्थिति में लाया गया। यह सब जॉन मार्शल की देखरेख में हुआ।

आज लगभग पचास स्मारक स्थल सांची के टीले पर ज्ञात हैं, जिनमें तीन स्तूप और कई मंदिर भी हैं। यह स्मारक 1989 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित हुआ है।

कैसे जाएं

यहां रेल मार्ग, सड़क मार्ग और वायुमार्ग तीनों से पहुंचा जा सकता है। सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन विदिशा या भोपाल है, जहां से यहां आ सकते हैं, वायुमार्ग से भोपाल से उतर कर, सड़क मार्ग से यहां पहुंचा जा सकता है। ●

पुस्तक परिचय

ई-पुस्तक : अकेला गुब्बारा
लेखक : देवेन्द्र कुमार
प्रकाशक : जायस प्रकाशन
7982014609 पर आग्रह कर इसे प्राप्त कर सकते हैं।

यह पुस्तक एक प्रकार का नया प्रयोग है। स्थापित कथाकार देवेन्द्र कुमार जी ने इस किताब को सब तक पहुंचाने के लिए मौका होने पर भी किताब के रूप में न छपवाकर ई बुक के रूप में तैयार करवाया ताकि बाल पाठकों तक निशुल्क पहुंचाया जा सके। यह प्रयोग उन लेखकों को एक मंच देता है, जो अपने व्यय पर 100 किताब छपवाते हैं और उनके खत्म होने के बाद कोई उस किताब का नामलेवा नहीं बचता, क्योंकि प्रकाशक उसे ज्यादा छापकर बेचने का प्रयास करता ही नहीं। कम कीमत में अनगिनत पाठको तक यह ई. किताब एक क्लिक पर पहुंच जाती है।

संपर्क करें- 7982014609
किताब डाउनलोड करने का लिंक
https://drive.google.com/file/d/1g12x9ngoOOab6AQPj94vcrxU2uXpN_lY/view?usp=drivesdk

इस बाल कहानी संग्रह का आवरण पृष्ठ ही नहीं, भीतरी सज्जा भी इतनी सुंदर बन पड़ी है कि खुद को रोक नहीं पाई और एक बैठक में ही कहानियां पढ़ गई।

आओ कुछ बनाएं, बच्चो द्वारा सूखे पेड़ को आबाद करना। कभी नीरव और लोगों की जूठन से घिरा रहने वाला पेड़ अब बच्चो की सूझबूझ से चहचहाहट से घिरा है।

आशीर्वाद, केवल बड़े ही नहीं देते बच्चो की हंसी में भी इसके बीज अंकुरित होते हैं। सीख देती बढ़िया कथा।

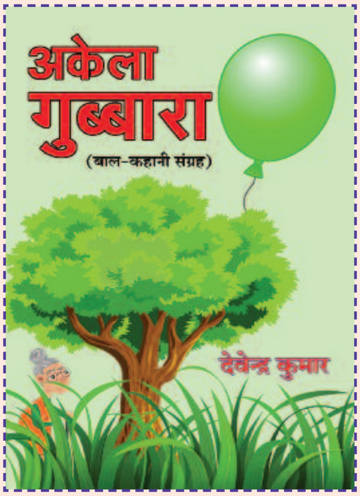

अकेला गुब्बारा, यद्यपि हवा के कारनामे कुछ चमत्कृत करते हैं। फिर भी एक बढ़िया संदेश हम इस कहानी से ले सकते हैं कि हवा ने कितने अच्छे अच्छे काम किए, ऐसे काम हम भी तो कर सकते हैं।

अंगूठी, मार्मिक कहानी है। एक मां की पीड़ा झलकती है।

कहानी अनोखा, वास्तव में एक अनोखी पहल है। भीम के पास कला तो है मगर उस कला को प्रशंसकों तक पहुंचाने का जरिया नहीं। जो कि बहुत आवश्यक है। भीम की निर्धनता इसके आड़े आ रही है। फिर उसे प्रशंसक के रूप में मिला अविनाश और भीम के दिन बदल गए। हम भी ऐसे किसी कलाकार को देखें तो उसकी सहायता अवश्य करें क्योंकि कला देश की पहचान होती है,उसे जीवित रखना आवश्यक है।

बुरी लाइन से निकालकर अच्छी लाइन से जोड़ती कहानी। बच्चे जिज्ञासु होते हैं, किसी बात को कहते हुए बड़ों को ध्यान रखना चाहिए कि कैसे प्रस्तुत करें।

चल अपनों के पास, चम्मच और गिलास के माध्यम से रोचक संवाद तो है ही, साथ ही प्यार पाने की तड़प इनसान ही नहीं इन निर्जीव सामानों में भी है। कि कोई इन्हें सहेजे। अच्छी कथा।

छोले भटूरे, यद्यपि कथा का शीर्षक से कोई नाता नहीं। किंतु कथा हाशिए पर जी रहे बाल मजदूरों को शिक्षा से जोड़ती है।

चिड़िया लॉटरी, बच्चो को पक्षी और पर्यावरण का महत्त्व बताते हुए उससे जोड़ती है।

जन्मदिन उदास है, अनाथ बच्चे प्रथम के पालक बने जीवनलाल का उसके प्रति स्नेह, प्रथम का साइकिल से स्नेह, अजय का प्रयास ये सब मिलकर जन्मदिन की उदासी को उत्सव में बदल देते हैं।

कहानी मेरी दोस्त,बच्चो को कहानी से जोड़ने का अच्छा प्रयास।

किस्सा निर्वासित परियों का, परी लोक की कथा जो अब धीरे धीरे लुप्त हो रही है। कारण बच्चे विज्ञान के करीब आ रहे हैं। साथ ही लेखक द्वारा अंत में उठाया प्रश्न होमवर्क देता है बच्चो को, स्मृति से परियों को ओझल नहीं होने देता।

सभी कहानियां न केवल बच्चों, अपितु बड़ों को भी मूल्य परक संदेश देती है।

समीक्षक : डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

सूचना

समीक्षा के लिए पुस्तकों का स्वागत है। जो लेखक पुस्तकें नहीं भेजना चाहते, वे अपनी पुस्तकों की समीक्षा करवाकर मुखपृष्ठ के साथ अन्य जानकारियों (पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, प्रकाशक और उसका पता, वेबसाइट या उसका फोन नंबर ताकि कोई खरीदना चाहे, तो संपर्क कर सके तथा मूल्य) हमें मेल करें। बिना किसी पूर्वाग्रह के उन्हें भी स्थान दिया जाएगा।

कमाल के समाचार

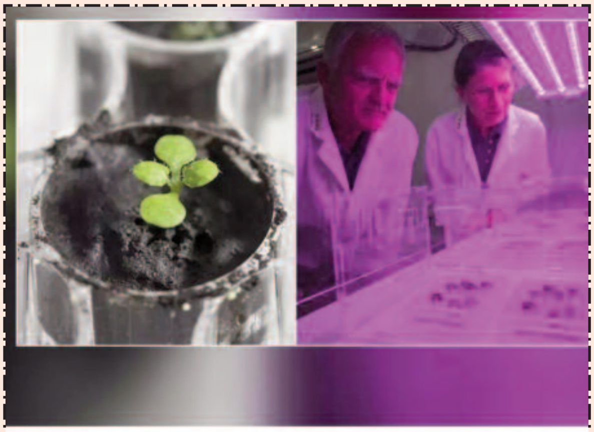

चांद की मिट्टी में पहली बार उगाए गए पौधे, नासा ने शेयर कीं तस्वीरें

अपोलो मिशन के दौरान चंद्रमा की सतह से एकत्रित मिट्टी में पहली बार पौधों को सफलतापूर्वक उगाया गया है जिसकी तस्वीरें नासा ने गुरुवार को शेयर कीं। फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने दशकों पहले अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा लाए गए मिट्टी में थेल क्रेस को लगाया था। पौधे धीमी गति से बढ़े, उनमें तनाव के लक्षण दिखे और वे अविकसित थे।

चेक रिपब्लिक में खुला दुनिया का सबसे लंबा फुटब्रिज; तस्वीर सामने आई

चेक रिपब्लिक के डोलनी मोरावा गांव में शुक्रवार को दुनिया का सबसे लंबा सस्पेंशन फुटब्रिज खोल दिया गया। 'स्काई ब्रिज 721' नामक यह फुटब्रिज 2,365-फीट लंबा है और समुद्र तल से 3,610 फीट की ऊंचाई पर बना है। इसके निर्माण में दो साल लगे और इसे बनाने में लगभग 200 मिलियन चेक क्राउन (करीब ₹65 करोड़) की लागत आई है।

देश के 52वें रामगढ़ विषधारी टाइगर रिज़र्व को किया गया अधिसूचित

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि सोमवार को राजस्थान के रामगढ़ विषधारी टाइगर रिज़र्व को अधिसूचित किया गया। उन्होंने कहा कि भारत का यह 52वां टाइगर रिज़र्व जैव विविधता का संरक्षण करेगा और इस क्षेत्र में पारिस्थितिक पर्यटन और विकास लाएगा। बकौल यादव, "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम अपने वन्य जीवन के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

मुझे पुलिस की वर्दी बहुत पसंद थी, बचपन में आईपीएस अफसर बनना चाहती थी: निकहत ज़रीन

महिला विश्व बॉक्सिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वालीं 25-वर्षीय भारतीय बॉक्सर निकहत ज़रीन ने एक इंटरव्यू में बताया है कि उनके बचपन का सपना एक आईपीएस अफसर बनना था। उन्होंने कहा, "पुलिस की वर्दी बहुत पसंद थी...स्कूल में आईपीएस अधिकारी बतौर मुख्य अतिथि आते थे...सोचती थी...एक दिन मैं भी यूनिफॉर्म पहनकर मुख्य अतिथि के रूप में स्कूल जाऊंगी।"

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर ✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**